श्रीः ।

श्रीमन्माणिकभट्टात्मजवैद्यवर

मोरेश्वरविरचितम् ।

वैद्यामृतम् ।

पंडितवसतिरामकृतभाषानुवादसमलंकृतम्।

तच्च.

भगीरथात्मजहरिप्रसादशर्म्मणा.

मुम्बापुर्यां.

"प्रबोधरत्नाकराख्य"

मुद्रणयन्त्रालयेमुद्रापितम् ।

शकाब्दाः १८१५

विक्रमाब्दाः १९५०

श्रीः ।

श्रीमन्माणिकभट्टात्मजवैद्यवर

मोरेश्वरविरचितम् ।

वैद्यामृतम् ।

पंडितवसतिरामकृतभाषानुवादसमलंकृतम्।

तच्च.

भगीरथात्मजहरिप्रसादशर्म्मणा.

मुम्बापुर्यां.

"प्रबोधरत्नाकराख्य" मुद्रणयन्त्रालये

मुद्रापितम् ।

शकाब्दाः १८१५ विक्रमाब्दाः १९५०

प्रस्तावना।

आयुर्वेदगुणग्राही सब सज्जनोंको मालूम हो कि-यह वैद्यामृत-नामक ग्रंथ अपने नामके अनुसार सत्यही सब वैद्योंको अमृतसमान हितदायी है. क्योंकि यह ग्रंथ मोरेश्वरनामक वैद्यनें बड़े परिश्रमसे बनाया है. इस ग्रंथमें सब इलाज ग्रंथकर्त्तानें अपनें अनुभव किये (अजमाये हुए) तथा गुरुसे सीखेहुए लिखे हैं. केवल ग्रंथोंमेंसेही नहीं लिखे हैं. और इसके श्लोकभी गद्यपद्यात्मक बड़े मनोहर हैं. यह ग्रंथ अबतक हिंदुस्तानी भाषामें कहीं न छपा था. हमने यह ग्रंथ 'सुमेरपुरनिवास्यावसथियाज्युपाह्ववैद्यवर' **प्राणिनाथजीके** पुरातन हस्तलिखित पुस्तकपरसे बेरीनिवासि पंडित **बस्तीरामजी**-द्वारा भाषाटीका बनवाके, पंडित **रामभद्रजीसे** शुद्ध कराके और अच्छे टाइपमें छपाके, तैयार किया. जहां कहीं टिप्पणीभी करीगई हैं. इस ग्रंथकी मनोहरता देखनेंसे मालूम होगी. यह ग्रंथ वैद्यजीवनके समान वैद्यकका काव्य है. भाषाटीका होनेंसे सब महाशयोंका उपयोगी है. इत्यलम्—

ग्रंथप्रकाशक.

हरिप्रसाद भगीरथजी,

कालिकादेवी रोड़—रामवाड़ी–मुंबई.

वैद्यामृतस्यानुक्रमणिका ।

॥ समाप्तेयमनुक्रमणिका ॥

वैद्यामृतम्.

भाषानुवाद समलंकृतम्.

मंगलाचरणम्

नत्वाब्रह्ममहेशविष्णुगिरिजानागास्यधन्वंतरीन्। पूज्या-
न्सुश्रुतवाग्भटप्रभृतिकान्सर्वांश्चवैद्यान्गुरून्॥श्रीमन्मा-
णिकभट्टवैद्यतनयोमोरेश्वराख्योभिषङ् । नानावैद्यमतं
विलोक्यकुरुतेवैद्यामृतंसुंदरम् ॥ १ ॥

श्रीगणेशायनमः–ब्रह्मा, विष्णु, शिव, पार्वती, गणेश, धन्वंतरि इनको और पूजने योग्य सुश्रुत वाग्भट्ट आदि संपूर्ण वैद्य तथा गुरुओंके नमस्कार करके, श्रीमान् माणिकभट्ट वैद्यके पुत्र मोरेश्वरनामक वैद्य, अनेक वैद्योंके मतको अच्छे प्रकार विचारके, सुंदर वैद्यामृत नाम (ग्रंथको) रचते हैं ॥ १ ॥

आत्रेयपाराशरसुश्रुताद्यैर्येनिर्मिताग्रंथनृपाःप्रसिद्धाः। स्व-
योग्यकार्यप्रविधानदक्षोग्रंथोस्तुमेसेवकएवतेषाम् ॥ २ ॥

अर्थ–आत्रेय, पाराशर, सुश्रुत आदिकोंने जो प्रसिद्ध ग्रंथराज रचे हैं; तिन ग्रंथोंका सेवक अपने योग्य कार्य करनेमें निपुण यह मेरा ग्रंथ हो ॥ २ ॥

यद्यप्यनार्यमिदमस्तिवचोमदीयंवैद्यास्तथापिभवतांहितहे-
तुरेव । यस्मादमुख्यकरणेकरणंमदीयःश्रीमत्सदाशिवप-
दांबुजभक्तियोगः ॥ ३ ॥

अर्थ–हे वैद्यो ! यद्यपि यह मेरा वचन श्रेष्ठ नहीं है तोभी तुम्हारे हितका कारणही है. क्योंकि-इस ग्रंथके रचनेमें श्रीसदाशिवजीके चरणकमलकी भक्तिका योगही मेरा सहायक है. (क्रिया सिद्धि करनेमें उत्तम साधक) है ॥ ३ ॥

शास्त्रप्रवीणाःक्रिययाविहीनाःक्रियाप्रवीणाःकिलशास्त्र-
हीनाः । एतादृशायद्यपिसंतिकिंतैर्वैद्यास्तएवोभयथाप्र-
वीणाः ॥ ४ ॥

अर्थ—जो शास्त्रमें निपुण हों और क्रिया (साधनसे) हीन हों. जो क्रियामें निपुण हों और शास्त्र नहीं जानते हों ऐसे वैद्य हैं तो उनसे क्या है ? किंतु जो इन दोनोंही प्रकारोमें निपुण होवें वेही वैद्य हैं ॥ ४ ॥

अथ ज्वरप्रतीकारः

समस्तामयमुख्यत्वाज्ज्वरस्यप्रथमंमया ।
प्रतीकारःसुधातुल्योयथामतिनिगद्यते ॥ ५ ॥

अर्थ—ग्रंथकर्त्ता कहता है, सब रोगोंमें मुख्य होनेसे पहले मैं अपनी बुद्धिके अनुसार ज्वरका इलाज (दूर होना,) अमृतके समान (चिकित्सा) कहता हूं ॥ ५ ॥

यवासादिक्काथौ ।

वातज्वरंहंतियवासविश्वामुस्तागुडूचीजनितःकषायः ।
पित्तज्वरंहंतिरजःकषायश्छिन्नाशिवापर्पटजोथवापि ॥ ६ ॥

अर्थ—जवासा, सूंठ, नागरमोथा, गिलोय इनका काढ़ा बनाके, पिलावे तो वातज्वर दूर होवे और पित्तपापड़ाका काढ़ा अथवा छोटी हरडे, पित्तपापड़ा इनके काढ़ासे पित्तज्वर नष्ट होता है ॥ ६ ॥

भार्ङ्यादिक्काथः ।

भार्ङ्गीपुष्करदेवदारुमगधाछिन्नावृषाब्दौषधैः । क्काथोयं
कफजज्वरंकसनकंसश्वासपार्श्वग्रहम् ॥ मांद्यंजाठरवन्हि-
जातमरुचिंनिर्मूलयत्येवसत् । पक्कान्नंक्षुधितोयथातरुगणा-
न्झंझामरुद्वायथा ॥ ७ ॥

अर्थ—भारंगी, पोहकरमूल, देवदारु, पीपल, गिलोय, बांसा, नागरमोथा, सूंठ इन्होंका काढ़ा पिलावे तो कफज्वर, खांसी, श्वास,

पसलीकी पीड़ा, मंदाग्निरोग, अरुचि, इनको शीघ्रही नष्ट करै. जैसे भूंखाजन अच्छे पक्कान्नको भक्षण करलेवे और महान् वायु (आंधी) वृक्षोंको तोड़ डालै. तैसे नाश करता है ॥ ७ ॥

अथ पंचभद्रक्वाथः।

किरातनागरामृतारजोव्दसंश्रृतंजलम् ।
निहंतिवातपित्तजज्वरंयथागजंहरिः ॥ ८ ॥

अर्थ—चिरायता, सूंठ, गिलोय, पित्तपापड़ा, नागरमोथा इन्होंका क्वाथ (काढ़ा) बनाके, पीवे तो वातपित्तज्वर ऐसे नष्ट होता है कि—जैसे हस्तीको सिंह नष्ट करता है (चिरायताआदि पांच औषधोंको पंचभद्र बोलते हैं यही इलाज वैद्य जीवनमेंभी लिखी है) ॥ ८ ॥

आरग्वधादिक्वाथः ।

आरग्वधाभयातिक्ताग्रंथिकाव्दश्रृतंपिवेत् ।
कफवातज्वरेसामशूलेदीपनपाचनम् ॥ ९ ॥

अर्थ—अमलतास, हरड़ै, कुटकी, पीपलामूल, नागरमोथा इनका (काढ़ा) आमसहित और शूलसहित कफवातज्वरमें पीना. यह पाचन और दीपन है ॥ ९ ॥

अथ चन्दनादिक्वाथः।

रक्तचंदनधनामृतवल्लीनिंबपद्मकभवंकथितंस्यात् ।
आशुपित्तकफज्वरतृष्णादाहवातहरमग्निकरंच ॥ १० ॥

अर्थ—लालचंदन, धनियां, गिलोय, नींबकी छाल, पद्माख इनका काढ़ा बनाके, पिलावे तो पित्त कफज्वर और तृषा, दाह, वमन इनका नाश करै. और जठराग्निको बढ़ावे ॥ १० ॥

अथ इन्द्रयवादिक्वाथः ।

कलिंगशुंठीधनतिक्ततिक्तानिंबामृताधान्यरजोन्वितानाम्।
सारिंगणीपुष्करचंदनानांपटोलभार्ङीवृषपद्मकानाम्॥११॥

कषायकःकासवमीपिपासादाहान्वितेचाष्टविधज्वरार्त्ते ।
सजंतुरोगेरुचिकामलार्त्तेदोषत्रयार्त्तेगदितोमुनींद्रैः ॥ १२ ॥

अर्थ–इंद्रयव, सूंठ, नागरमोथा, चिरायता, कुटकी, नींबकी छाल, धनियां, पित्तपापड़ा, भटकटैया, पोहकरमूल, लालचंदन, परवल, भारंगी, बांसा, पद्माख ॥ ११॥ इन्होंका क्वाथ, (काढ़ा) खांसी, वमन, तृषा, दाह, इनसे युक्त आठ प्रकारके ज्वरमें; कृमिरोग, अरुचि, कामला, सन्निपात इन सब रोगोंमें देना. मुनिजनोंने श्रेष्ठ कहा है ॥ १२ ॥

अथ तिक्तादिक्काथः ।

तिक्तापद्मकतोयचंदनधनावासाभयारग्वधैःपाठाविश्वकलिंगकामृतलतामुस्तैःकषायःकृतः ॥ कृष्णाचूर्णयुतस्त्रिदोषजनितेविष्टंभदाहान्वितेकासश्वासविलापतृडतिहितःसंदीपनःपाचनः ॥ १३ ॥

अर्थ–कुटकी, पद्माख, नेत्रवाला, लालचंदन, धनियां, बांसा, हरड़ै, अमलतास, पाठा, सूंठ, इंद्रजव, गिलोय, नागरमोथा इनका काढ़ा बना, तिसमें पीपलका चूर्ण और सहत मिलाके, पिलावे तो मलबंध, दाह आदिसे संयुक्त हुआ सन्निपातज्वर दूर हो. और खांसी, श्वास, प्रलाप, तृषा, वमन येभी दूर हों. यह औषध दीपन और पाचन है ॥ १३ ॥

अथ शुंठ्यादिचूर्णम् ।

शुंठीदारुशठीरजोबृहतिकातिक्ताकिरातांबुदानंताभिर्जनितःकषायकवरःकृष्णामधुभ्यांयुतः ॥ निःशेषंत्रितयोद्भवज्वरहरोजीर्णज्वरस्यांतकृत्कासारिर्विषमापहोऽपिगदितःशुंठ्यादिकःसूरिभिः ॥ १४ ॥

अर्थ–सूंठ, देवदार, कचूर, पित्तपापड़ा, बड़ी कटेहली, कुटकी, चिरायता, नागरमोथा (लालजड़वाला) धमासा इनका क्वाथ (काढ़ा) बना, तिसमें पीपलका चूर्ण और शहत मिलाके, पीवे तो सं-

पूर्ण सन्निपातज्वर, जीर्णज्वर, नाश हों. और खांसी तथा विषमज्वरको भी नष्ट करनेवाला यह शुंठ्यादिचूर्ण पंडितोंने कहा है ॥ १४ ॥

अथ कर्णमूलशोथप्रतीकारः ।

शांतेत्रिदोषेश्रुतिमूलजातशोथस्यरक्तंप्रविमोचयेत्प्राक् । पश्चान्मुहुःकट्फलकृष्णजीरविश्वाकुलित्थोद्भवलेपनंस्यात् ॥ १५ ॥

अर्थ—सन्निपात ज्वर, शांत होनेके बाद कानकी जड़में शोथ होजावे तो पहले फस्त आदिसे रुधिर निकलावे. पीछे कायफल, कालाजीरा, सूंठ, कुलथी इनका लेप करै ॥ १५ ॥

अथ विषमज्वरप्रतीकारः ।

पटोलमधुकाभयाकटकरोहिणीमुस्तजःकषायकवरःपरं-विषममाशुजेजीयते । तथावृषपयोधरामृतलताशिवावि-श्वजंकणामधुयुतंश्रृतंविषमनाशनंकीर्त्तितम् ॥ १६ ॥

अर्थ—परवल, महुआकी छाल, छोटी हरड़ै, कुटकी, नागरमोथा, पीपल इनका काढ़ा बना, शहत मिलाके, पीवे तो विषमज्वरको नाश हो ॥ १६ ॥

अथ सामान्यज्वरप्रतीकारः ।

यवसर्षपरुक्शिवावचाजतुलिंवाज्यभवंप्रधूपनम् । ज्वर-नाशकरंपरंस्मृतंविविधोपायकरैश्चिकित्सकैः ॥ १७ ॥

अर्थ—जव, सिरसव, कुष्ठ, हरड़ै, बच, लाख, निंबूके पत्ते, घृत, इन सबोंको मिला, धूप देनेंसे ज्वरका नाश हो ऐसे अनेक-प्रकारके उपाय करनेंवाले वैद्योनें कहा है ॥ १७ ॥

अथामलकादिचूर्णम् ।

आमलसैंधवचित्रकपथ्यापिप्पलिचूर्णमिदंज्वरहारि । रोचनदीपनपाचनमाशुभेदितथागदितंमुनिवर्यैः ॥ १८ ॥

अर्थ—आंवला, सैंधा नमक, चीत, हरड़ै, पीपली इनका चूर्ण ज्वर-

को दूर करनेवाला है तथा रुचिकारक, दीपन और पाचन है. मलको शीघ्रही पतला करके, गिराता है ऐसा मुनिश्रेष्ठोंने कहा है ॥ १८ ॥

अथ जीर्णज्वरप्रतीकारः ।

जलचतुःपलयुक्तपयःपलेश्रृतकणात्रयमग्निकरंपरम् । श्वसनकासबलासपुरातनज्वरहरंरुचिदंबलवर्द्धनम् ॥ १९ ॥

अर्थ—चार पल अर्थात् १६ तोले जलमें चार तोले (गौका) दूध मिला, तिसमें तीन पीपल डाल, फिर औटाके, (उबालके) पीवे तो जठराग्नि बढ़े. श्वास, खांसी, कफ, जीर्णज्वर ये सब दूर हों. रुचि बढ़े और बल बढ़े ॥ १९ ॥

अथ लघुमालिनीवसंतोरसः ।

एकांशोमरिचाद्दुभौरसकतःसंमर्दयेन्मसृणेपश्चान्निंबुरसेन मर्दनविधिर्यावत्घृतंगच्छति । पथ्यंदुग्धयुतंकणामधुयुतो वल्लप्रमाणोभवेत्प्राचीनज्वरहातथाविषमहाधातुस्थितध्वंसनः ॥ २० ॥ रक्तातीसृतिपायुजप्रदरहानेत्रामयध्वंसनोयावद्रक्तभवामयप्रहरणःपित्तामयध्वंसनः॥रोगानीकगलग्रहोविजयतेश्रीमालिनिप्रागयंवैद्यानांमतिशालिनांबहुतरंश्रीदोवसंताभिधः ॥ २१ ॥

अर्थ—सफेद मिरच १ भाग, खपरिया २ भाग लेना. तिसको गोमूत्रमें शुद्ध करना. पीछे इन दोनोंको सुपारीप्रमाण गौके, घृतमें खरल करै. फिर निंबूके रसमें खरल करै. जबतक घृतकी चिकनाई नहीं जावे तबतक निंबूके रसमें खरल करे. जब सूख जावे तब इसकी गोली तीन ३ रत्ती प्रमाणकी बना लेवे. इसके खानेसे जीर्णज्वर, विषमज्वर, धातुगतज्वर दूर होता है ॥ २० ॥ और रक्तातीसार, गुदरोग, प्रदररोग (पैरा) नेत्ररोग, सब प्रकारके रक्तजन्यरोग, पित्तरोग दूर होते हैं. ऐसे इन सब रोगोंके दलको नष्ट करनेवाला यह श्रीमालिनीवसंत नामक रस अत्यंत निपुण वैद्योंको शोभा वा लक्ष्मी देनेवाला है ॥ २१ ॥

अथ ज्वरातिसारप्रतीकारः।

इसवगोलइतिप्रथितंजनेहरतितज्ज्वरभाजमतीसृतिम् । अनुभवाल्लिखितंनतुशास्त्रतोभवतुतद्भिषजामुपयोगिकम् ॥२२ ॥

अर्थ—इसबगोलको रात्रिविषे जलमें भिगोके, फिर प्रातःकाल रस निकाल, छानके, मिश्री मिलाके, पिलावे तो ज्वरमें उत्पन्न हुआ अतिसार (दस्त) बंद होवे. यह इलाज मैंनें अपनें अनुभवसे लिखा है किसी शास्त्रमेंसे नहीं लिखा है. इसलिये कि—यह सब वैद्योंको उपयोगी (हितदायी) होगा ॥ २२ ॥

अथ शुंठ्यादिक्काथः ।

विश्वामृतावालकचंदनानांसवत्सकांभोदकिरातकानाम्। हितःकषायोवमिदाहतृष्णाशोफातिसारज्वरपीडितानाम् ॥ २३ ॥

अर्थ—सूंठ, गिलोय, नेत्रवाला, लाल चंदन, कूड़ा (कुरैया) की छाल, नागरमोथा, चिरायता इन्होंका क्वाथ, (काढ़ा) वमन, दाह, तृषा, शोफ (सूझन) अतिसार ज्वर इनसे पीड़ित जनोंको हितदायी है ॥ २३ ॥

अथपाठादिक्काथः ।

पाठाबिल्वंधातकीवत्सकांबुमुस्तंलोध्रंचंदनंदाडिमंच। क्षौद्रोद्रिक्तंक्काथमेतंवदंतिपिच्छास्रावेशूलरक्तामयुक्ते ॥ २४ ॥

अर्थ—पाठा, बेल, आंवला, कूड़की छाल, नेत्रवाला, नागरमोथा, लोध, चंदन, अनार इनका क्वाथ (काढ़ा) बना, शहत डालके, पीवे तो रंगयुक्त आंव, शूल, रक्तसहित आंव ऐसे अतिसारको दूर करे ॥ २४ ॥

अथ शुंठीपुटपाकः ।

किंचित्घृताक्तौषधचूर्णमेतदेरंडपत्रावृतमग्निपक्कम् ।
सितासमंहंतितनोतिचैतदामातिसारंजठरानलंच॥ २५ ॥

अर्थ—सूंठके चूर्णको कुछ घृतमें भिगोवे फिर गोला बना, अरंडके पत्ते लपेटके, तिसके ऊपर मट्टी लीपके, अग्निमें देके, पकावे, फिर उसमें बराबरकी मिश्री मिलाके, खावे तो यह औषध आमातिसारको दूर करै और जठराग्निको बढ़ावे ॥ २५ ॥

अथ बिल्वपुटपाकः ।

समोचसारंसहनागफेनंसजातिसस्यंपुटपाकयोगात् ।
निहंतिमालूरफलंनराणांसर्वातिसाराननुभूतमेतत्॥२६॥

अर्थ—सेमलवृक्षका गोंद—अफीम, जायफल, बेलफलकी गूदी इन सबोंको इकट्ठे कर, पीसके, गोला बना, पूर्वोक्त प्रकारसे पुटपाकमें दग्ध करै. इसके सेवनसे सब प्रकारके अतिसार दूर होते हैं ॥ २६ ॥

गुरुतत्वगुटिका ।

कीटनिष्ठीवनंघृष्टंनागफेनंसकुंकुमम् । तंडुलप्रमितंदत्तमतिसारनिषूदनम् ॥ २७॥ इदंमयागुरोर्लब्धंनतुशास्त्राद्भिषग्वराः । भवतामुपयोगायगुरुतत्त्वंप्रकाशितम् ॥ २८ ॥

अर्थ—अफीम और केशरको शहतमें घिसके, एक चावलभर गोली बनाके, देनेंसे अतिसार दूर होवे ॥ २७ ॥ हे वैद्यो ! यह इलाज मैनें अपनें गुरुसे ले, लिखा है. शास्त्र देखके, नहीं लिखा है (फक्त) आप लोगोंके उपयोगके वास्ते गुरुजीका तत्व प्रगट किया है ॥ २८ ॥

अथ गुडूच्यादि क्वाथः ।

गुडूच्यतिविषामुस्तानागरैःक्वथितंजलम् । मंदानलामसंयुक्तेहितंसंग्रहणीगदे ॥ २९ ॥

अर्थ—गिलोय, अतीस, नागरमोथा, सूंठ इन्होंका क्वाथ (काढ़ा) मंदाग्नि और आमसहित संग्रहणी रोगको दूर करता है ॥२९॥

अथ कनकसुन्दरोरसः ।

मरिचाहिंगुलगंधकटंकणामृतकणाकनकोद्भवबीजकैः। प्र-

हरयोर्हितयावधिखल्वकेतनुतरंविजयारसमर्दितैः ॥ ३० ॥
कनकसुंदरएषमहारसोहरतिसंग्रहणीगदमुत्कटम् । ज्वरम-
तीसृतिमग्निविहीनतांवतयथागरुडोभुजगावलिम् ॥ ३१ ॥

अर्थ–मिर्च, हिंगुल, तेलियामीठ, शुद्धगंधक, सुहागा, बच्छनाग, (शुद्धविष) पीपल, धत्तूराके बीज इन सबोंको समान भाग ले, दो पहरतक भांगके रसमें खरलमें पीसे बहुत बारीख होवे तबतक॥३०॥ यह कनकसुंदर नामक महान् रस है. दारुण संग्रहणी, ज्वर, अतिसार, मंदाग्नि इन सब रोगोंको ऐसे हरता है कि–जैसे गरुड़जी बहुतसे सर्पोंका नाश करते हैं॥ ३१ ॥

अथ लाहीचूर्णम् ।

त्रिजातकव्योपवरारसेंद्रगंधाजमोदामिरिबेल्लराज्यः । बि-
ल्वानलाजाजिलवंगधान्यगजोपकुल्यामधुकंपटूनि ॥ ३२ ॥
हिंगुःकुवेराह्वयमोचसारौक्षारौजयासर्वचतुर्थभागा । इ-
दंहिचूर्णंविनिहंतितूर्णंप्रसूतिकासंग्रहणीविकारम् ॥ ३३ ॥
समस्तरोगांतकमग्निकारिभ्राजिष्णुताकारिसुतक्रपीतम् ।
इमंप्रयोगंबहुधानुभूतंचकारधात्रीकिलकापिलाही ॥ ३४ ॥

अर्थ–त्रिजातक अर्थात् दालचिनी, तमालपत्र, (तेजपात) इलायची, सूंठ, मिर्च, पीपल, त्रिफला (आंवला, हरड़, बहेड़) पारा, गंधक, अजमोदा, सौंफ, हलदी, बेलगिरी, जीरा, लौंग, धनियां, गजपीपल, मुलहटी, पांचो नमक ॥ ३२ ॥ भूनी हींग, कुवेराह्व सागरगोटेकी गिरी, शाल्मलि (सेमल) वृक्षका गोंद, जवाखार, सज्जीखार. इन सबोंको समान भाग लेवे. और इनसबोंसे चौगुनी शुद्ध भांग लेवे. फिर बारीख चूर्ण बना लेवे. यह चूर्ण शीघ्रही प्रसूतिरोग और संग्रहणी रोगको दूर करता है ॥ ३३ ॥ तक्र (छाछ) के संग पिया जावे तो सब

---

१ कुवेराव्हय कहिये एक वेल होती है उसमें चिकना सफेद सुपारीप्रमाण फल लगता है उसकी गूदी लेनी.

रोगोंको दूर करै. और जठराग्निको बढ़ावै, तेज बढ़ावै इस प्रयोग (नुकसे) को कोई लाहीनामक दाई अनेक बार निश्चय (आजमास) करके बनाती भई ॥ ३४ ॥

अथार्शःप्रतीकारः ।

शुष्कशूरणहुताशनाभयानागरोषणगुडोद्भवावटी । अष्ट वेदशशिभूतदर्धकंशक्रभागसहितारुचिप्रदा ॥ ३५ ॥ अग्निमांद्यगुदजार्तिहारिणीविट्त्रिबंधजठरार्तिनाशिनी । आर्द्रपीलुफलभक्षणंतथार्शःकृमिग्रहणिगुल्मनाशनम् ॥३६॥

अर्थ—यह सूरणकंद अर्थात् जमीकंदवटिका है सूखा हुआ जमीकंद आठ भाग, चितक चार भाग, हरड़ै एकभाग, सूंठ एक भाग, मिर्च आधा भाग, गुड़. चौदह भाग ऐसे इन सबों-को लेवे. फिर विधिपूर्वक गोली बनावे यह गोली रुचि देनेवाली है ॥ ३५ ॥ मंदाग्नि, गुदरोग (बवासीर) मलबंध, उदररोग इन सब रोगोंको दूर करे. और ओंदे, पीलुवावृक्षके फलको खावे इस अनुपानसे कृमि, संग्रहणी, गुल्म रोग, दूर होते हैं ३६

नृकेशादिधूपम् ।

नृकेशाहिनिर्मोकवेल्लार्कमूलशमीपत्रशृंगांकुरैर्हिंगुयुक्तैः । प्रधूपोर्शसांनाशयत्याशुवीर्यंयथाकामिनीनित्यसंगोनरा-णाम् ॥ ३७ ॥

अर्थ—मनुष्योंके बाल, सांपकी केंचली, वायविड़ंग, आककी जड़, समीके पत्ते, मेड़ासींगी, हींग, इन सबोंको मिला, धूप दे-नेसे शीघ्रही बवासीर दूर होती है. जैसे नित्य (हमेशह) स्त्रीसंग करनेसे मनुष्योंका वीर्य नष्ट होजाता है तैसे ॥ ३७ ॥

अजीर्णविषूचिकाप्रतीकारः

व्योषत्रिवृल्लवणपंचकमग्निजीरंक्षाराभयाकृमिरिपुःकण-मूलचव्ये। तक्रेणवोष्णसलिलेनहिचूर्णमेतदग्निंप्रचण्डमिव संतनुतेनराणाम् ॥३८॥ पथ्योग्रगंधात्रिडहिंगुशुंठीविषा-

कलिंगोद्भवचूर्णमेतत्। सुखांबुनाहंत्यरुचिंविषूचीमजीर्ण-
शूलौचहुताशकारि ॥ ३९ ॥

अर्थ–सूंठ, मिरच, पीपल, निशोथ, पांचो नमक, चित्रक, जीरा, जवाखार, हरड़े, वायबिडंग, पीपलामूल, चव्य इन सबको समान भाग ले, चूर्ण बना तक्र (माठा) अथवा कछुक गरम जलके संग लेवे तो मनुप्योंकी जठराग्नि तेज होवे ॥ ३८ ॥ हरड़ै, बच, बिड़, (काला नमक) हींग, सूंठ, अतीस, इंद्रजव इनका चूर्ण बना, कछुक गरम जलके संग लेवे तो अरुचि विषूची (हैजा) अजीर्ण, शूल इन रोगोंको दूर करे. और जठराग्निको बढ़ावै ॥ ३९ ॥

हिंग्वादिचूर्णम्।

हिंगूग्रगंधविडनागरदीप्यपथ्याचूर्णविभागपरिवर्द्धितमे-
तदाशु। आनाहशूलगुदजानलमांद्यगुल्मविष्टंभकोदरवि-
षूचिहरंसमस्तम् ॥ ४० ॥

अर्थ–हींग, १ बच, २ कालानोंन, ३ सूंठ, ४ अजमान, ५ हरड़ै ६ इनको एकोत्तर वृद्धिभाग क्रमसे लेके, चूर्ण बनावे. यह चूर्ण अफरा, शूल, गुदरोग, मंदाग्नि, गुल्म, मलबंध, उदररोग, विषूची (हैजा) इन रोगोंको शीघ्रही नष्ट करै ॥ ४० ॥

अथवड़वानलोरसः।

तालादेकोरसादेकएकःसीसकभस्मनः। द्वौभागौगंधका-
च्छुद्धान्मरिचाच्छोडशांशकः ॥ ४१ ॥ चूर्णकृत्वारक्ति-
कैकाघृतेनसहभक्षिता। विषूचिसर्वशूलानिप्लीहानमुदरं
तथा ॥ ४२ ॥ गुल्मंसंग्रहणीरोगंश्वासकासकलानिलान्।
अग्निमांद्यादिकान्रोगान्हंत्यसौवडवानलः ॥ ४३ ॥

अर्थ–शुद्धहरताल एक भाग, पारा १ भाग, सीसाकी भस्म १ भाग, शुद्ध गंधक दो २ भाग, मिर्च १६ सोलहभाग ॥४१॥ इनका चूर्ण बना, एकरत्ती प्रमाण घृतके संग खावे तो बिषूची (हैजा) सर्व प्रकारकी शूल, तिल्ली, ऊदररोग, ॥ ४२ ॥ गुल्म, संग्रहणी,

श्वास, खांसी, कफ, वायु, मंदाग्नि, इन सबोंको यह वड़वानल नामक रस दूर करता है ॥ ४३ ॥

अथवन्हिनामरसः ।

जातीजातंत्रिकर्षमरिचमपिपलंचार्द्धकर्षप्रमाणम् । गंधंसूतं लवंगंविषमिदमखिलंचिंचिणीसस्यतोये ॥ पिष्टामाषैकमात्रावितरतिदहनंवन्हिमांद्येचसद्योरोगानशूलानिलादीन्दहतिकृतगुणोवन्हिनामारसोऽयम् ॥ ४४ ॥

अर्थ—जावत्री अढ़ाई २॥ तोला, जायफल २॥ अढ़ाई तोला, मिर्च४चारतोला, गंधक ५ मासे, पारा पांच ५ मासे, लौंग ५ मासे, शुद्ध बच्छनाग ५ मासे इन सबोंको इमलीके रसमें पीसकरके, एक उड़द प्रमाण मात्राको खावे तो मंदाग्निवालेकी अग्नि शीघ्रही बढ़ै और वायु—शूल आदि रोगोंकोभी यह अग्निनामक रस अनुपानके योगसे हरता है ॥ ४४ ॥

कृमिप्रतीकारः

खदिरकुटजनिंबोग्रात्रिवृद्व्योपपथ्यामलकलिफलजोगोमूत्रसिद्धःकषायः । मुनिमितदिनपीतःसत्यमेतन्नमिथ्याकृमिकुलशतकोटीर्बद्धमूलानिहंति ॥ ४५ ॥ येनमाक्षिकसंयुक्तंचूर्णंवैडंगजंयदि । सेवितंतस्यजंतूनांभीतिर्नास्तिकदाचन ॥ ४६ ॥

अर्थ—खैरसार, इंद्रजव, नींबकी छाल, बच, निशोथ, सूंठ, मिर्च, पीपल, हरड़ै, आंवला, बहेड़ा, इन सबोंको गोमूत्रमें पका, क्वाथ, (काढ़ा) बना, सात दिनतक पीवे तो सैकड़ों कारोड़ों बद्धमूलवाले कृमि (कीट चुन्नेआदि) नष्ट होवें. यह सत्य है झूंठ न जानना ॥४५॥ अथवा जिसनें बायबिडंगका चूर्ण शहदके संग खाया उसे कृमियोंका भय कभी न होगा ॥ ४६ ॥

पांडुरोगप्रतीकारः

पुनर्नवानिंबपटोलतिक्ताविश्वाभयादारुनिशामृतानाम् ।

कषायकःपाण्डुगदंनिहंतिसश्वासकासोदरशूलशोथम् ॥४७॥ गैरिकामलरात्रीणामंजनंकामलापहम् । तथागदितमाचार्यैस्तिक्ताचूर्णसशर्करम् ॥ ४८ ॥

अर्थ–पुनर्नवा (सांठी) नींब, परवल, कुटकी, सूंठ, हरडै, हलदी, गिलोय. इन्होंका क्वाथ (काढ़ा) बनाके, पिलावे तो पांडु (पीलिया) श्वास, खांसी, उदररोग, शूल, शोफ (सूझन) ये सब दूर होवें ॥ ४७ ॥ अथवा गेरू, आंवला, हलदी इनको पानीमें पीस, नेत्रोंमें डाले तो कामला (पीलिया) रोग दूर होवे. अथवा कुटकीके चूर्णमें खांड़ मिलके, फांके तो पांडुरोग दूर हो ॥ ४८ ॥

रक्तपित्तप्रतीकारः ।

वृषपत्ररसःसितामधुभ्यांसहितोलोहितपित्तमाशुहंति। वृषगोस्तनिकाभयाशृतंतत्प्रतिवापसनास्रकासनुद्या॥४९॥ शर्करामधुसंयुक्तंछागदुग्धमथापिवा। गव्यंपंचगुणेतोयेकथितंरक्तपित्तनुत् ॥ ५० ॥ दाडिमीकुसुमतोयनावनंनासिकास्रमपहंतिसत्वरम् । माषपिष्टकटुकूलभूतिकालेपनंचशिरसोहितावहम् ॥ ५१ ॥ इतिश्रीअर्हमदनगरस्थितमाणिकभट्टवैद्यात्मजमोरेश्वरविरचितेवैद्यामृतेप्रथमाऽलंकारः ॥ १ ॥

अर्थ–अरुसाके पत्तोंके रसमें शहत और मिश्री मिलाके, चाटे अथवा पीवे तो, रक्तपित्त रोग दूर हो अथवा वंसा मुनक्का, दाख, हरड़े, इन्होंका क्वाथ (काढ़ा) बना, तिस जलमें प्रतिवाप अर्थात् जिन औषधियोंका काढ़ा किया है उतनीहीं उन औषधोंको पीसके, उस काढ़ामें मिलादे. फिर इस काढ़ेको पीवे तो पित्तरक्त और खांसी दूर होवे ॥ ४९ ॥ अथवा बकरीके दूधमें खांड़ और शहत मिलाके, पीवे तो रक्तपित्त दूर हो वा पांचगुनें पानीमें गौका दूध मिला क्वाथ (काढ़ा) बना, दूधमात्र बाकी रह जावे तब पिलावे, कुल्ले करावे तो रक्तपित्त दूर हो ॥ ५० ॥ अनारके फूलोंके

रसका नाश देवे तो शीघ्रही नासिकासे पड़ता हुआ रक्त बंद होवे और उड़दकी पीठी, रेसमी वस्त्रकी राख इनको पानीमें घोर शिरमें लेप करे तो रक्तपित्त दूर होवे ॥ ९१ ॥ ॥ इतिश्रीइंद्रप्रस्थप्रान्तवेरीपुरनिवासिद्विजशालग्रामात्मजपंडितवसतिरामविरचितभाषाटीकायां प्रथमोऽलंकारः ॥ १ ॥

क्षयप्रतीकारः ।

सितोपलावंशभवोपकुल्यातृटित्वचामाज्यमधुप्रयुक्तम् ।
अंत्यात्तदूर्ध्वंद्विगुणंनिहंतिचूर्णंसमस्तान्क्षयजातरोगान्॥१॥
सश्वासकासानलमांद्यसुप्तजिह्वारुचिश्लेष्मकपार्श्वशूलान् ।
ज्वरोर्ध्वरक्तांसकरांघ्रिदाहयुक्तान्यथापापगणान्मुरारिः॥२॥
आयुर्यदास्याद्बलवत्नराणांसरक्तपित्तश्वसनक्षयाणाम् ।
मधुप्रयुक्तायशसाप्रतीतावासात्तदाकिंनकरिष्यतीयम्॥३॥

अर्थ–सितोपलादिचूर्ण–मिसरी १६ भाग, वंशलोचन ८ भाग, पीपल ४ भाग, छोटी इलायची २ भाग, दालचिनी १ भाग इन्होंको बारीख पीस, शहत और मक्खनके संग चाटै. तो संपूर्ण क्षयीरोग नाश हों ॥ १ ॥ और श्वास, खांसी, मंदाग्नि, जीभकीजड़ता, अरुचि, कफरोग, पशलीशूल, ज्वर, मुखसे रुधिरगिरना, कंधा और हाथपैरोंकी दाह इन सबोंको ऐसे नष्ट करता है जैसे पापगणोंकूं मुरारि (नारायण)॥२॥ जो यदि रक्तपित्त तथा श्वास, क्षयीरोगवाले जनोंकी आयु बलवान् शेष है तो यशकरके, प्रसिद्ध हुआ बांसोकाही क्राथ (काढ़ा) वा चूर्णमें शहद मिलाके, देवे तब क्या ये रोग दूर नहीं होते हैं ? अर्थात् अवश्य दूर होते हैं॥ ३ ॥

अथ नवनीतप्रयोगः ।

नवनीतसितामधुप्रयुक्तोवरखोहेमभवःक्षयंक्षिणोति । वितथःप्रभवेदयंप्रयोगोयदितन्मेशपथःसदाशिवस्य ॥ ४ ॥

अर्थ–नवनीत (नेनू) (मक्खन), घृत और मिसरी, शहद, सोनेका वर्क इनको मिला, खानेसे क्षयीरोग नाश होता है. जो

यदि यह प्रयोग झूंठा हो तो मुझे इष्टदेव सदाशिवकी शपथ (सौगन्ध) है. अर्थात् यह नुक़सा कभी असत्य नहीं होवे ॥ ४ ॥

अथ शंखपोटलीरसः ।

रसंगंधंकंबोर्भसितमपिकापर्दभसितंमरीचंभूचंद्रांबुधिरसस-हस्रांशुलविकम्। रसांऽघ्रंशंटंकंसकलमपिचूर्णीकृतमिदंक्र-माद्यावन्निष्कंघृतसहितमद्यात्क्षयहरम् ॥ ५ ॥

अर्थ–पारा १ भाग, गंधक १ भाग, शंखकी भस्म ४ भाग, कौड़ीकी भस्म ६ भाग, मिर्च १२ बारह भाग और पारासे चौथे हिस्सेका सुहागा इस प्रकार इन सबोंको ग्रहण कर, चूर्णकर, फिर इसको घृतके संग हमेशह प्रातःकालसमयमें क्रमसे खावे. १ मासेतक ख़ुराक चढ़ालेवे. यह चूर्ण क्षयी रोगको नष्ट करता है ॥ ५ ॥

कासश्वासप्रतीकारः ।

भार्ङीकट्फलकट्तृणांबुदधनांशृग्युग्रगंधारजोपथ्यानाग-रदेववृक्षजनितोबाल्हीकमध्वान्वितः।क्काथोऽयंज्वरकासहा श्वसनहाश्लेष्मामयध्वंसिनोवक्रोत्थामयहागलग्रहहरोवा-तापहःकीर्तितः ॥ ६ ॥

अर्थ–भारंगी, कायफल, रोहिपतृण (रामकपूर) नागरमोथा, धनिया, काकड़ासींगी, बच, चिरायता, हरड़, सूंठ, देवदारु इनका काढ़ा बना, हींग और शहद मिलाके, पीवे तो ज्वर, खांसी, श्वास, कफरोग, मुखके रोग, गलग्रह, वातरोग ये सब दूर होते हैं ॥ ६ ॥

यवक्षारादिगुटिका ।

यवक्षारकर्षोमरीचंद्विकर्षंद्विकर्षोपकुल्यापलंदाडिमस्य । पलैर्वेदसंख्यैर्गुडोऽत्रप्रदेयोगुटीयंहठात्सर्वकासान्निहंति ॥७॥

अर्थ–जवाखार, एक १ तोला, मिर्च दो २ तोला, अनारकी छाल ४ तोला, गुड़ सोलह १६ तोला, इनसबोंको कूट, मिलाके,

गोली बना लेवे. यह गोली अपना हठ करके, सब प्रकारकी खांसीको दूर करती है ॥ ७ ॥

गुरुगुटिका ।

अर्कप्रसूनांतरवह्निजानांगुटीसकासंश्वसनंनिहंति ।
गुरोःसकाशादिदमापितत्वंवैद्येनमोरेश्वरसंज्ञकेन ॥ ८ ॥

अर्थ—आकके फूलोंकेभीतरकी धूल, मिर्च इनको पीस, गोली बनाके, खिलावे तो खांसीरोग नष्ट होवे, यह नुकसा मोरेश्वरनामक वैद्य (ग्रंथकर्त्ता) नें अपनें गुरुसे सीखा है ॥ ८ ॥

कासारिधूम्रपानप्रयोगः ।

शरपुंखाजटाधूम्रादानात्कासःपलायते।कांतावक्षोजसंस्पर्शाद्यमिनांनियमोयथा ॥ ९ ॥ पंचांगकृष्णधत्तूरधूपात् कासःपलायते । यवासाधूमपानेनकासोनश्यतितत्क्षणात् ॥ १० ॥

अर्थ—शरपुंखा (शरफोकाली.) की जड़के धुंवेसे धूम्रपान करानेंसे खांसीरोग दूर होता है, जैसे स्त्रीके कुचमर्दन करनेंसे नियमवाले पुरुषोंका नियम खंडित होता है ॥ ९ ॥ काले धतूरेके पचांग (मूल, फल, पत्र, पुष्प, छाल) को ग्रहण कर, तिसके धुंवेंसे अथवा धमासाके धुंवेंसे (धूम्रपानसे) शीघ्रही खांसी नष्ट होती है ॥ १० ॥

कासश्वासद्रुमकुठारः ।

अंत्रेणहीनंमरिचैःसगर्भरंभाफलंतन्निशिसन्निधाय।प्रातः सुभृष्टंमृदुपावकेऽद्यात्श्वासान्छिनत्तीवतरून्कुठारः ॥ ११ ॥

अर्थ—केलाके फलको ग्रहण कर, भीतरकी आंत (सूतसेको) निकाल, तहां काली मिर्चोंका चूर्ण भर दे. फिर एक रात्रि धरा रक्खे. प्रातःकाल मंद २ अग्निमें भूनके, (पकाके) खावे तो सब सब प्रकारके श्वासरोगोंको ऐसे हरै कि—जैसे वृक्षोंको कुल्हाड़ा काट देता है ॥ ११ ॥

लाक्षादिचूर्णम् ।

लाक्षिकामधुकपद्मकोषणापक्ववार्हतफलाज्यमाक्षिकैः। ले-
हिकाक्षयजकासमाहरेत्कामिनीवदयितस्मरज्वरम् ॥ १२ ॥

अर्थ—पीपलकी लाख, मुलहठी, पद्माख, पीपल, कटेहली इन्होंको पीस, घृत और शहदमें मिला, चटनी बनावें, यह चटनी क्षयीसे उपजी खांसीको ऐसे नष्ट करदेती है. कि—जैसे सुंदर स्त्री अपने पतिके कामज्वरको दूर करै ॥ १२ ॥

कंटकाद्यवलेहः ।

क्षुद्रासत्वंवाकषायंघनंवाभार्ङीशृंगीकट्फलंकारवीच।व्यो-
षंकुष्ठंसैंधवंमुस्तयोस्तज्जीरेक्षारौदीप्यचित्राजमोदाः ॥१३॥
सर्वतुल्यंचाष्टभागाभयास्यादेयःसर्वैर्वेदभागोगुडोऽत्र। प-
क्त्वावन्हौक्षौद्रयुक्तोऽवलीढःकासश्वासौदुर्धरौसर्वजातौ १४
अग्नेर्मांद्यंकामलांपांडुरोगंगुल्मंहिक्कांराजयक्ष्मज्वरौच। अ-
र्शःप्लीहानाहवातोर्ध्ववातान्हंतिक्षुद्रालेहएषःक्षणेन ॥ १५ ॥

अर्थ—कटेहलीका सत अथवा काढ़ा वा कड़ा काढ़ा बनावे. तिसमें भारंगी, काकड़ासींगी, कायफल, सौंफ, सूंठ, मिर्च, पीपल, कुष्ठ, सेंधव नमक, नागरमोथा, जीरा, जवाखार, साजीखार, अजमान, चित्रक, अजमोदा ॥ १३ ॥ इन सबोंको समान भाग ले, आठ भाग हरड़े ले, फिर बारीख चूर्ण बना, संपूर्ण चूर्णसे चौगुना गुड़ मिला, अग्निमें पकाके, तिसमें शहत डालके, चाटे तो सब प्रकारके कठोर श्वास, खांसीरोग दूर होवें ॥ १४ ॥ मंदाग्नि, कामला पीलिया, गुल्म, हिचकी, क्षयीरोग, ज्वर, बवासीर, तापतिल्ली, अफरा, वात, ऊर्ध्ववात इन सब रोगोंको यह कटेहलीका अवलेह क्षणामात्रमें हरता है ॥ १५ ॥

कासश्वासारिगुटिका ।

सूतगंधचपलाहरीतकीभूतवासवृषविप्रयष्टिकाः ।

भागतोऽथपरिवृद्धिमागताबब्बुलकथिततोयमर्दितः १६॥

अर्थ–शुद्धपारा १ भाग, गंधक २ भाग, पीपली ३ भाग, हरडे ४ भाग, बहेड़ा ५ भाग, अरुसा ६ भाग, भारंगी ७भाग इन सबों-को पीसकर, बारीख चूर्णकर, बबूलके काथ (काढ़ेमें पीसे) फिर १ रत्तीप्रमाण गोली बना लेवे. यह गोली श्वास वा खांसीरोगमें देनी श्रेष्ठ है ॥ १६ ॥

ताम्रभस्म।

ताम्रंकृशानौसलिलेविधायनिर्वापयेल्लोणिरसेत्रिवारम्।
उपर्यधस्तस्यपटुप्रदत्वापुटंप्रदत्वाचभवेत्सुभस्म ॥ १७ ॥
कासातुरायश्वसनातुरायहितंतदेतन्मगधामधुभ्याम् । य-
थातृषार्त्तायसुगंधशीतंचकोरनेत्राकरदत्तमंभः ॥ १८ ॥

अर्थ–तांबाको अग्निमें तपाके, जलमें बुड़ावे. फिर इसीप्रकार तीनबार कांजीमें बुड़ावे. फिर उसके ऊपर नींचे पांचों नमकोंका चूर्ण अथवा रूपामखीका चूर्ण डाले फिर गजपुटमें धरके, फूंक देवे. तब सुंदर भस्म हो जाती है ॥१७ ॥ एक रत्तीप्रमाण इस भस्म-को पीपली और शहदमें मिलाके, खांसीवालेको देना अथवा श्वा-सरोगवालेको देना हित है. जैसे प्यासे पुरुषको सुंदर नेत्रोंवा-ली स्त्रीके हाथसे पानी मिलजावे तो सुख होवे तैसे सुखी हो ॥१८॥

हिक्काप्रतीकारः।

हरेणुकापिप्पलिकाकषायोहिंग्वन्वितोऽपोहतिपंचहिक्काः ।
नस्यंतथालक्तकसंभवंचस्तन्येनवापोहतिमाक्षिकाविद्॥१९॥

अर्थ–कपिला (रेणुकबीज) पीपली इनका काथ (काढ़ा) बना, तिसमें हींग मिलाके, पीवे तो पांच प्रकारकी हिचकी दूर होवें. अथवा लाखके रसकी नाश वा मांखीके विष्टको स्त्रीके दूधमें घिस, तिसको नाश देवे तो हिचकी नाश होवें ॥ १९ ॥

स्वरभंगप्रतीकारः ।

दुग्धप्रयुक्तामलकीनराणांनष्टस्वराणांसुखमातनोति । य-
थामृगाक्षीसुरतंनराणांकंदर्पदर्पप्रतिपीडितानाम् ॥ २० ॥

अर्थ–आंवलोंको पीस, चूर्ण बना, दूधके संग पीवे तो जिन मनुष्योंका कंठ खोकला हो, फटास्वर निकलता हो, उनका कंठ साफ हो. जैसे मृगनयनास्त्रीके संग रमण करनेंसे कामपीड़ित जनों-को सुख होता है तैसे ॥ २० ॥

अरोचकप्रतीकारः ।

सौवर्चलंगोस्तनिकामरीचमजाजिकाकारविकाम्लवृक्षैः ।
क्षौद्रंगुडंदाडिममित्युपायैःकरोतिविध्वंसमरोचकानाम् २१॥

अर्थ–सौंचरनमक, मुनक्का, दाख, मिर्च, जीरा, सौंफ, अमली, शहद, गुड़, अनार, इत्यादिक उपायोंकरके (इनके खानेसे) अरुचि दूर होतीहै ॥ २१ ॥

छर्दिप्रतीकारः ।

पथ्यामलक्षौद्रसिताश्वलाजाःपलोन्मिताःस्युःकुडवंजलस्य ।
तद्वाससागालितमाशुपीतंछर्दिंत्रिदोषैर्जनितांनिहंति ॥२२॥
त्रिजातकव्योपलवंगजीरनागाह्वयग्रंथिकचूर्णमेतत्। मधुप्र
युक्तंसहसानिहंतिदुष्टार्थजांछर्दिमपिप्रसक्ताम् ॥ २३ ॥

अर्थ–हरड़ै, आंवला, शहद, मिसरी, धानकी खील, ऐसे ये सब चार २ तोले और पानी १६ सोलह तोले. फिर इन औषधोंको बारीख कर, सरबत बना, वस्त्रमें छान, पीवे तो शीघ्रही त्रिदोषसे उपजी छर्दि (वमन) दूर होवे ॥ २२ ॥ दालचिनी, तेजपांत, इला-यची, सूंठ, मिर्च, पीपली. लौंग, जीरा, नागकेशर‘ पीपलामूल, इन्होंका चूर्ण बना, शहतमें मिलाके, देवे तो बुरे पदार्थ खानेंसे अथवा दुर्गंधसे उपजी वमन शीघ्रही बंद होवे ॥ २३ ॥

तृष्णाप्रतीकारः ।

अर्धाढकंरुचिरपर्युषितस्यदध्नःखंडस्यषोडशपलानिशशि-
प्रभस्य । सर्पिःपलंमधुपलंमरिचंद्विकर्षंशुंठ्यापलार्द्धमपि-
चार्द्धपलंतृटेश्च॥२४॥ श्लक्ष्णेपटेललनयामृदुपाणिघृष्टेकर्पू-
रधूलिसुरभीकृतचारुभांडे । एषावृकोदरकृतासुरसारसा-
लासुस्वादिताभगवतामधुसूदनेन ॥ २५॥

अर्थ–सुंदर चक्का जमा हुआ बासी (पहले दिनका जमाया हुआ) दही एकसौ अट्ठाईस १२८ तोले और सुंदर चंद्रसमान सफेद खांड़ ६४ तोले, घृत चार तोले, शहद ४ तोले, मिर्च दो तोले, सूंठ दो तोले, इलायची दो तोले, ऐसे इन सबोंको मिला (सुगंधित द्रव्योंका बारीख चूर्ण बना) फिर बारीख कपड़ेमें कर, स्त्रीके कोमल (मंद) हाथसे छनवावै. कपूरकी धूलसे सुगंधित किये हुए पात्रमें धरै. यह रसाला (शिखरन) भीमसेनजीने बनाई है. श्रीकृष्णभगवान्‌ने सुंदर प्रकारसे चक्खी है. (स्वाद लिया) है इसके पीनेसे तृषा बंद होती है ॥ २९ ॥

मूर्च्छाप्रतीकारः

द्राक्षामृतानागरपुष्कराणांसग्रंथिकानांकथितंसकृष्णम् ।
मदेषुमूर्च्छासहितंघृताढ्यंदुरालभायाःकथितंभ्रमेच ॥२६॥

अर्थ–दाख, गिलोय, सूंठ, पोहकरमूल, पीपलामूल, इन्होंका काढ़ा बना, तिसमें पीपलका चूर्ण डालके, पिलावे तो मद और मूर्च्छा दूर होवे. धमांसाके काढ़ामें घी मिलाके, पिलावे तो भ्रम दूर होवे ॥ २६ ॥

दाहप्रतीकारः

सहस्रधौताज्यविलेपनेनदाहःशमंगच्छतिशीघ्रमेव । तथा
हिमोधान्यसमुद्भवांतर्दाहंसतृष्णंससितंनिहंति ॥ २७ ॥

अर्थ–हजारवार धोये हुए घृतका लेपकरनेसे शीघ्रही दाह शांतहो

तथा धनियाका हिम अर्थात् धनियाको रात्रिमें मिट्टीके बर्तनमें भिगोवे प्रातःकाल छान, सरबतसा बनावे. फिर इसमें मिश्री मिलाके, पिलावे तो तृषासहित अंतर्दाह दूर हो ॥ २७ ॥

अपस्मारप्रतीकारः

भजेन्माक्षिकेणप्रयुक्तंवचायारजः क्षीरभक्ताशनोमानवो- यः । अपस्माररोगश्चिरोत्थोऽपिघोरःशमंयातितस्याशु- नात्रास्तिशंका ॥ २८ ॥

अर्थ–वचका चूर्ण बना, शहदमें मिलाके, (हमेशह) खावे; और दूध, भातका पथ्य भोजनक करे. तो उस मनुष्यका बहुत दिनोंसे उत्पन्नहुआ मृगीरोग शीघ्रही दूर होवे. इसमें कुछ संदेह नहीं है२८

वातव्याधिप्रतीकारः

एषाकर्षमितावटीसुघटिताजीर्णेगुडेयुक्तितोह्यिग्रंदीप्यतु- षंपलद्वयमिताशुंठीतथातेजनी । भक्ष्यैकानिलरोगिणाघृ- तयुतापथ्याशिनातत्वतोवातव्याधिविनाशनेसुमतिभिः- ख्याताभुजंगीपरा ॥ २९ ॥

अर्थ–भुजंगी गुटिका । पुराना गुड़ १ तोला, अजमानका तुष २ तोला, सूंठ ८ तोले, मालकांगनी ८ तोले, इन सबोंको मिला, एक २ तोलाप्रमाणकी सुंदर गोली बनालेवे. फिर पथ्य भोजन करनेंवाले वातव्याधिवालेको घृतके संग एक गोली हमेशह खानी चाहिये. ऐसे वात व्याधि नाश करनेमें उत्तम बुद्धिवालोंनें यह भुजंगी गोली कही है ॥ २९ ॥

वातारिगुटिका ।

तेजोह्वाप्रस्थमेकंपयसिगजगुणेपाकयुक्त्याविपाच्यंव्योषंप- थ्यांशताव्हांक्रमिरिपुमनलंग्रंथिकंचाजमोदम् । उग्राकुष्ठ- श्वगंधासुरतरुममृतंपालिकानिप्रदद्यात्सर्वान्वातान्वटीयंघृ- तमधुसहितानास्तिभावानकरोति ॥ ३० ॥

अर्थ–चौंसठ ६४ तोले मालकांगनीको आठ गुने पानीमें युक्तिसे पकावे. फिर अष्टमांश बाकी रह जावे तब उसमें हरडै, सौंफ, बायविड़ंग, चित्रक, पीपलामूल, अजमोद, बच, कुष्ठ, असगंध, देवदार, बच्छनाग, इन सब औषधोंको चार २ तोले प्रमाण ले, चूर्ण बनाके, उसको क्वाथ (काढ़े) में मिलावे. फिर गोली बना लेवे. यह गोली संपूर्ण प्रकारके वातरोगोंको दूर करती है ॥ ३० ॥

सर्ववातारितैलम् ।

निर्गुंडिकारसात्प्रस्थंप्रस्थंमार्कवजाद्रसात्। रसाद्धत्तूरजात्प्रस्थंगोमूत्रंप्रस्थसंमितम् ॥३१॥ वचाकुष्ठंहेमबीजंतेजोऽह्वाकट्फलंतथा । पलार्द्धांशानिसर्वैस्तुवत्सनागःसमोमतः ॥ ३२ ॥ तैलप्रस्थंपचेद्युक्त्यावातरोगेषुशस्यते । हेमंतेहरिणाक्षीणांगाढमालिंगनंयथा ॥ ३३ ॥

अर्थ–निर्गुंडी (संभालू) के पत्तोंका रस ६४ तोले मार्कव (भृंगराज) (घमिरा) (भंगरा) के पत्तोंका रस ६४ तोले, धतूराके पत्तोंका रस ६४ तोले, गोमूत्र ६४ चौंसठ तोले ॥ ३१ ॥ और बच, कुष्ठ, धतूराके बीज, मालकांगनी, कायफल, ये सब दो २ तोलाप्रमाण, इन सबोंकी बराबर बच्छनाग ॥ ३२ ॥ इन्हें पीस, मिला देवे. और चौंसठ तोले तिलोंका तेल मिला देवे. पीछे युक्तिसे इस तेलको (पूर्वोक्त रस और इन औषधोंमें) पकावे, यह तेल सब वातरोगोंमें श्रेष्ठ है. जैसे हेमंतऋतुमें सुंदर स्त्रीका आलिंगन सुखदायी होता है. ऐसे सुखदायी है ॥ ३३ ॥

वातरक्तप्रतीकारः

एरंडतैलेनगुडूचिकायाःक्काथोऽथवावार्द्धितपिप्पलीवा। गुडेनपथ्याखिलवातरक्तंविनाशयेत्पथ्ययुतस्यपुंसः ॥ ३४ ॥

अर्थ–गिलोयके क्वाथ (काढ़े) में अरंडका तेल मिलाके, पीवे अथवा वर्द्धमान (एकोत्तर वृद्धिभागक्रमसे) पीपलका सेवन करे,

अथवा गुड़के संग हरड़ोंका चूर्ण खावे, तो वातरक्त दूर हो. औषध-सेवन करनेवालेको पथ्य भोजन करना चाहिये ॥ ३४ ॥

हरतालभस्म ।

तालंरसंतुवरिकांनयनेंदुबाणभागैर्विशुद्धवसुजातरसेविमर्द्य । दत्वाशरावयुगुलेप्रविधायमुद्रांदद्याद्गजाह्वपुटमस्य भवेत्सुभस्म ॥ ३५ ॥ दृष्ट्वाकृतिंप्रकृतिमप्यखिलामवस्थां दृष्ट्वापुनश्चबहुधाबहुधाविचार्य। दद्याच्चतंदुलमिताहरितालमात्रांविद्यामयायतिवरादियमापियत्नात् ॥ ३६ ॥

अर्थ–हरताल २ भाग, पारा १ भाग, फटकड़ी ९ भाग ले, इनको सफेद पुनर्नवा (सांठी) के रसमें पीसे. फिर सराईमें डाल, ऊपर दूसरी सराई ढँकके, माटी आदि लीपके, मुख बंद कर देवे. इस प्रकार गजपुटयंत्रमें धरके, जलानेसे सुंदर भस्म हो जाती है ॥ ३५ ॥ फिर रोगीका आकार और प्रकृति तथा संपूर्ण अवस्था देखके, बलाबल, विचार (एक रत्ती या २ रत्ती) प्रमाण अथवा चावलभर इस हरतालमात्राको देवे. यह विद्या मैनें एक यतिवर (सन्यासी) से सीखी है यत्नसे प्राप्त करी है ॥ ३६ ॥

ऊरुस्तंभप्रतीकारः

भल्लातकुल्यामगधाजटानांकृतःकषायोमधुसंप्रयुक्तः । ऊरुग्रहंघोरमपिप्रवृद्धंनिहंतिगोमूत्रयुताकणावा ॥ ३७ ॥

अर्थ–भिलावां, पीपली, पीपलामूल, जटामांसी इनका काढ़ा बना, शहत मिलाके, पिलावे तो ऊरुस्तंभ (जाघोंको बंद करनेवाली वात) दूर हो. अथवा गोमूत्रके साथ पीपलीका चूर्ण देवे तो दूर हो ॥ ३७ ॥

आमवातप्रतीकारः ।

रास्नारग्वधदेवदारुऋतुभूच्छिन्नोद्भवागोक्षुरैरेरंडेनयुतैः कषायकवरोविश्वारजोमिश्रितः। नानासंधिरुजान्वितंवि-

जयतेघोरामवातामयंस्वर्णांगीकुचपद्मकुड्मलरुचिर्दीपोंध-
कारंयथा ॥ ३८ ॥

अर्थ–रायसन, अमलतासकी गूदी, देवदार, पुनर्नवा (सांठी) की जड़, गिलोय, गोखरू, अरंडकी जड़ इनका काढ़ा बना, तिसमें सूंठका चूर्ण डाले. इसके सेवनसे अनेक प्रकारकी संधिपीड़ा, आमवात आदि घोर व्याधि नाश होवें. जैसे सुवर्णसरीखेवर्णवाली स्त्रीका देदीप्यमान कुचकमलकी कलीसरीखा दीपक अंधकारको दूर करता है तैसे ॥ ३८ ॥

अथ पारदभस्म ।

शरावनिहितंसूतंद्विवंगंमुहुर्मुहुः। दत्वाग्निंसूर्ययामांतंनिं-
बकाष्ठेनघट्टयेत् ॥३९॥ एवंभवेत्पीतवर्णारसराजस्यभू-
तिका । यथानुपानंरोगेषुप्रदद्यात्भिषगुत्तमः ॥ ४० ॥
अर्जितंविविधोपायैर्जंगमाद्भिषजान्मया । इदंतत्त्वंमल-
ब्धंवुपालनीयंचिकित्सकैः ॥ ४१ ॥

अर्थ–पारा एक १ भाग, रांगा २ भाग ले, मिट्टीके पात्रमें डाल, वारंवार नींबके सोंटेसे पीसे. फिर बारह प्रहरतक अग्नि देके, पीसे ऐसे करनेंसे पाराकी भस्म पीतवर्ण होजाती है ॥ ३९ ॥ फिर इस भस्मको यथायोग्य अनुपानके संग उत्तम वैद्य सबरोगोंमे देवे ॥ ४० ॥ यह तत्व (दवाई) मैंनें किसी जंगम (विचरते हुए) वैद्यसे प्राप्त करी है. सब वैद्योंको इसकी पालना करना चाहिये॥४१॥

शूलप्रतीकारः ।

तुरंगीपुरीषोदकंहिंगुयुक्तंमहाशूलहारिप्रदिष्टंभिषग्भिः ।
यथाहिंगुविश्वाविडैर्वापितोऽसौकुलित्थोद्भवोवाकषायःप्र-
दिष्टः ॥ ४२ ॥

अर्थ–घोड़ीकी लीदके रसमें हींग मिलाके, देवे तो महाशूल (पेटदर्द) दूर हो अथवा कुलथीके काढ़ेमें सूंठ, हींग, बिडनोन

इनका चूर्ण मिलाके, पीवे तो शूल (पेटकादर्द) बंद हो. ऐसे उत्तम वैद्योंनें कहा है ॥ ४२ ॥

शुंठ्यादिवटी

विश्वावचाहिंगुमरीचजीरामृतानलैर्मार्कवतोयपिष्टैः । कृतावटीयंचणकप्रमाणाशूलाग्निमांद्यानिलरोगहंत्री ॥ ४३ ॥

अर्थ–सूंठ, बच, हींग, मिर्च, जीरा, गिलोय, चित्रक, इनको कूट, वस्त्रमें छान, भृंगराज (घमिरा) के रसमें पीस कर, चनाप्रमाण गोली बांधलेवे. यह गोली शूल, मंदाग्नि आदि सब रोगोंको हरती है ॥ ४३ ॥

शंखवटी ।

चिंचावल्कलभूतिकामलमितातत्तुल्यभागःपटुव्यूहोनिंबुरसेनकल्कितमिदंशंखोपिभूत्यासमः। यावद्धस्तविचूर्णितोभवतितंसंताप्यनिर्वापयेत्पश्चाद्धिंगुमरीचनागरकणाःकर्षप्रमाणाःक्षिपेत् ॥ ४४ ॥ निष्कांशौविषगंधकौरसयुतौदत्वाविमर्द्यौतनूकोलास्थिप्रमिताग्निमांद्यजनितान्रोगान्निहंतिक्षणात् । शूलंसंग्रहणीमजीर्णमरुचिंसंपक्तिशूलंक्षयंत्वेषाशंखवटीनिजोपकृतिभिर्विश्वंसदारक्षति ॥ ४५ ॥

अर्थ–अमलीके फलकी छालकी भस्म ४ चार तोला, पांचों नमक ४ तोले, इन्होंको निंबूके रसमें पीस कल्क[1] बनावे शंखको ४ तोला प्रमाण लेके, अग्निमें जला, निंबूके रसमें भिगोवे, जबतक हाथसे चूर्ण नहीं हो तबतक अग्निमें तपा, निंबूके रसमें भिगोवे, फिर इनमें हींग, मिर्च, सूंठ, पीपली ये एक २ तोला प्रमाण डाले॥४४॥ और चार ४ मासे वच्छनाग, पारा, गंधक, ये मिलाके फिर अच्छी तरह खरलकर, बेरकी गुंठलीसमान गोली बना लेवे, यह गोली

---

१ वस्तुमात्रं शिलापिष्टं शुष्कं वा जलमिश्रितम् । तदेवसूरिभिःपूर्वैःकल्कइत्यभिधीयते ॥ अर्थ–वस्तुमात्र सूखी या जल मिली शिलमें जो पीसी जावे उसेही पूर्वाचार्योंने कल्क कहा है ॥

मंदाग्निसे उपजे सब रोगोंको क्षणमात्रमें नष्ट करती है और शूल, संग्रहणी, अजीर्ण, अरुचि, पक्ति शूल अर्थात् आहार न पचनेसे आमाशयमें शूलहो, क्षयी, इन सब रोगोंको नष्ट करती है और यह शंखवटी अपनें उपकारसे सदा विश्वकी रक्षा करती है ॥४९॥

उदावर्तप्रतीकारः ।

क्षारत्रयंलवणपंचकमग्निदीपेव्योषाभयाक्रमिरिपुत्रिवृदुग्रगंधा। चूर्णःस्नुहीजपयसाबहुधाविभाव्योदावर्त्तगुल्मजठरप्रभृतीन्निहंति ॥ ४६ ॥

अर्थ—जवाखार, साजीखार, पापड़खार, पांचोंनमक, चीत, अजमान, सूंठ, मिर्च, पीपल, हरड़ै, वायविड़ंग, निशोथ, बच इन्होंका चूर्ण बना, थोहरके दूधमें अनेकवार भावना देके तैयार करै यह चूर्ण उदावर्त्त, गुल्म, आदि रोगोंको हरता है ॥ ४६ ॥

गुल्मप्लीहादिप्रतीकारः ।

यवक्षारोयवानीचसैंधवंचाम्लवेतसम् । हरीतकीवचाहिंगुचूर्णमुष्णेनवारिणा ॥ ४७ ॥ सप्ताहाद्गुल्मनिचयंसशूलंसपरिगृहं । भिनत्तिनात्रसंदेहोवन्हेर्वृद्धिंकरोतिच ॥ ४८ ॥

अर्थ—जवाखार, अजमान, सेंधव नमक, चूक (अमलबेंत) हरड़ै. बच, हींग, इन्होंका चूर्ण बना, गरम जलके संग लेवे तो ॥ ४७ ॥ सात दिनमें सब प्रकारका गुल्म, (गोला) शूलरोग, दूर हो और जठराग्नि बढ़ै इसमें कुछ संदेह नहीं है ॥ ४८ ॥

बिन्दुघृतः ।

कंपिल्लत्रिवृतोःसमंस्नुहिपयःसर्वैःसमानोरसोधात्र्याःसर्वसमानयंघृतमदस्तुल्यंपयःसैंधवम् । स्वल्पांशंविपचेदिदंविजयतेकर्षप्रमाणंघृतंगुल्मान्शूलपरिग्रहादिसहितान्प्लीहोदरंकच्छपम् ॥ ४९ ॥

अर्थ—कपीला १ भाग, निशोथ १ भाग, थोहरका दूध दो भाग इन सबोंके बराबर (४ भाग) आंवलेका रस सबोंके बराबर

(८ भाग) शहद, घृत, दूध ८ भाग कल्कुक अर्थात् पांच चारमासे सेंधौ नमक ऐसे सबोंको मिला, अग्निसे पकावे फिर एक तोला-प्रमाण इस घृतको देवे तो गुल्म, शूल रोग, प्लीहा (तिल्ली रोग) कच्छप अर्थात् कछवाकी पीठसरीखा ऊंचा उदर हो, इन सब रोगोंको हरै ॥ ४९ ॥

शंखद्रावरसः ।

अर्कस्नुक्सातलाचिंचापलाशकदलीतिलाः । अपामार्गो-मुष्ककश्चकपर्दःशंखएवच ॥ ५० ॥ एतेषांभूतिजःक्षारः पारदःपटुपंचकं । पंचक्षाराःसमंसर्वेत्रिभागोगंधकःस्मृ-तः ॥ ५१ ॥ भूरसाचैवसोराचकासीसन्नवसारदः । ए-तच्चतुष्टयंसर्वैरोषधैस्तुल्यभागिकं ॥ ५२ ॥ सर्वेषांकज्ज-लिंकृत्वानिंबुनीरेणमर्दयेत् । प्रदद्यान्नलिकायंत्रेवन्हिया-मचतुष्टयं ॥ ५३ ॥ दत्वाद्रवंतुगृण्हीयात्सूतिकाद्रवकार-कम् । एकवल्लंद्विवल्लंवादद्यान्नलिकयारसं ॥ ५४ ॥ गु-ल्मार्शःप्लीहमुख्यानांरोगाणामंतकःपरः। शंखद्रवरसोह्ये-षःकृतकर्मानसंशयः ॥ ५५ ॥

अर्थ—आक, थोहर, सातला (शिकाकई) अमली, ढाक, केला, तिल, अपामार्ग (लटजीरा) मोरवा (घंटापाटलिवृक्ष) कौड़ी, शंख ॥ ५० ॥ इन ग्यारह वस्तुओंकी राखका खार, पारा, पांचों नमक, पांचोंखार (जवाखार, साजीखार, पापड़खार, बागड़खार नूणी) इन सब वस्तुओंको समान भाग ले, और गंधक तीन भाग-लेना चाहिये ॥ ५१ ॥ फटकड़ी, सोरा, कसीस, नौसादर इन चार औषधोंको पूर्वोक्त सब औषधोंके समान लेवे. सो पूर्वोक्त २५ भाग हुई हैं इस्से अनुमान ६ छह २ तोला प्रमाण चारों लेनी ॥ ५२ ॥ इन सब औषधोंको बारीख पीस, निंबूके रसमें घोटै. फिर नलिका-यंत्रमें विधिपूर्वक रखके, चार पहरतक अग्नि दे ॥ २३ ॥ फिर अग्नि देके, इस रसको निकाल, सीसीआदिमें धरे, यह शंख-

द्रावरस सीपी, कौड़ी आदिको (द्रव) गला सकता है और गुल्म, बवासीर, तिल्ली–आदि रोगोंको हरता है ॥ ५४ ॥ यह शंखद्राव रस एक रत्ती अथवा दो रत्तीप्रमाण देना चाहिये, फिर अपने काम-को यह रस सिद्ध करता है, अर्थात् पूर्वोक्त सब रोगोंको नष्ट कर-ता है, इसमें संदेह नहीं ॥ ५५ ॥

हृद्रोगप्रतीकारः ।

पिप्पलीसहितबीजकपूरकंद्राक्निहंतिनवनीतसंयुतम्। शूलहृत्क्षतयुतंहृदामयंविघ्नसंगमिवसाधुमंडलम् ॥ ५६ ॥
इतिश्रीमदहंमदनगरस्थितमाणिकभट्टवैद्यात्मजमोरेश्वर-विरचितेवैद्यामृतेद्वितीयालंकारः ॥ २ ॥

अर्थ–पिपली, बिजौराका गूदा अथवा बीज इनको नवनीत (मक्खन,) के संग सेवन करे तो शूल, क्षयी, हृद्रोग इनको उपद्रवोंसहित नष्ट करता है जैसे साधुजनोंका समाज विघ्नसमूहको नष्ट करता है तैसे ॥५६ ॥ इतिश्रीबेरीपुरनिवासिवसतिरामविरचित-वैद्यामृतभाषाटीकायांद्वितीयोलंकारः ॥ २ ॥

मूत्रकृच्छ्रप्रतीकारः ।

पाषाणभेदकृतमालकधन्वयासपथ्यात्रिकंटककषायनिषेवणेन। मध्वन्वितेनसहसाविरहंप्रयातिरुक्दाहबंधसहितं-किलमूत्रकृच्छ्रम् ॥ १ ॥

अर्थ–पाषाणभेद, हाड़जोड़ा अमलतासका गूदा, धमासा, हरड़ै, गोखरू इन्होंके काढ़ेमें शहत मिलाके, पिलावे तो पीड़ा दाहसहित मूत्रकृच्छ्र (मूत्रावरोध) दूर होवे ॥ १ ॥

मूत्राघातप्रतीकारः ।

दुग्धमाक्षिकयुतासखेयदासेवितातुतिलकोलभूतिका। मूत्रघातजनितव्यथातदादाहवत्यपिनृणांनतिष्ठति ॥ २ ॥

अर्थ–तिलोंके कांडोंकी (डांकलोंकी) राखको दूधमें मिला,

तिसमें शहत मिलाके, पीवे तो मनुष्योंके जो दाहयुक्त मूत्रकृच्छ्ररोग है वह सब दूर हो ॥ २ ॥

अश्मरीप्रतीकारः ।

आकल्लगोक्षुरजटातुलसीशिलाभिदेरंडमूलमगधामधुकैःप्र-
युक्तः । तक्राव्हमूलसुरसासुरपुष्पशुंठीकाथोनिहंतिबहु-
लामतिवापितोयम् ॥ ३ ॥ सप्ताहमेवपिबतांनियमेनपुंसां
घोराश्मरीमतिरुजंसहशर्करांच । आवीपयोमधुविमिश्रि-
तमाशुतद्वत्चूर्णत्रिवृत्कुटजबीजभवंवदंति ॥ ४ ॥

अर्थ–अकरकरा, गोखरूकी जड़, तुलसीके पत्ते, पाषाणभेद, अरंडकी जड़, पीपल, मुलहटी, कूड़ाकी जड़, निर्गुंडी, लवंग, सूंठ इन्होंका काढ़ा बना, तिसमें इलायचीका चूर्ण छोड़े ॥ ३ ॥ इसी प्रकार बनाके, सात दिनतक पीवें तो उनमनुष्योंके पथरी रोग पीड़ासहित मूत्रशर्करा (जिसके मूत्रमें रेतीसी कटके गिरती हो) यह सब दूर हो. अथवा बकरीके दूधमें शहत और निशोथ तथा इंद्रजवका चूर्ण मिलाके, पीवेतो शीघ्रही यह रोग नष्ट होवे ॥ ४ ॥

प्रमेहप्रतीकारः ।

धात्र्याःकषायंमधुरात्रियुक्तंवटांकुराणांसमधुंकषायम् ।
पाषाणभेदंमधुमिश्रमेतत्त्रयंप्रमेहापहमामनंति ॥ ५ ॥

अर्थ–आंवलोंका काढ़ा करके, तिसमें शहद और हलदी मिलाके, देवे. अथवा बड़के अंकुरोंका काढ़ा बना, शहद मिलाके, दे. अथवा पाषाणभेद (हाड़जोड़ा) के चूर्णको शहतमें मिलाके, देवे तो प्रमेहरोगका नाश हो. ये तीन (नुकसे) प्रमेह (मूत्ररोग) को दूर करनेवाले कहे हैं ॥ ५ ॥

प्रमेहादिनाशकवटी ।

त्रिकंटकानांकथितेष्टनिघ्नेपुरंपचेत्पाकविधानयुक्त्या ।
फलत्रिकव्योषपयोधराणांचूर्णपुरेणप्रमितंप्रदद्यात् ॥ ६ ॥

वटीप्रमेहंप्रदरंचमूत्रघातंचकृच्छ्रंचतथाश्मरींच। शुक्रस्यदो-
षंसकलांश्चवातान्निहंतिमेघानिववायुवेगः ॥ ७ ॥

अर्थ–अठगुने पानीमें गोखुरुवोंका काढ़ा बनावे. अष्टमांश बा-
की रेहे तब उस क्वाथ (काढ़े) में विधिपूर्वक गूगलको पकावे फिर
गूगलकी बराबर त्रिफला (आंवला हरड़, बहेड़ा) सूंठ, मिर्च,
पीपल, नागरमोथा इनका चूर्ण डालै ॥ ६ ॥ कड़ा हो जावे तब
इसकी गोली बांध लेवै, यह गोली प्रमेह, प्रदर, (पैरा) मूत्रा-
घात, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, वीर्यदोष, संपूर्ण वातरोग इनको ऐसे नष्ट
करती है कि–जैसे मेघोंको वायुका वेग नष्ट करदेता है ॥ ७ ॥

वंगेश्वरोरसः ।

समानभागेशुचिताम्रवंगेतयोःसमानंलवणंप्रसिद्धम् । श-
रावयोःस्थाप्यविधायमुद्रांददेत्पुटंतस्यगजाभिधेयम् ॥ ८ ॥
ततोभवेद्भस्मविशेषसौम्यंयथानुपानंननुसेवनीयम् । सम-
स्तमेहांतकमग्निदायिकासापहारिश्वसनापहारि ॥ ९ ॥
शुक्रस्यदार्ढ्यंप्रविधानदक्षंप्रमत्तनारीसुखदानबीजम् ।
इदंहितत्वंजटिलस्यसेवांविधायवैद्येनमयाप्रलब्धम् ॥ १० ॥

अर्थ–शुद्ध किया हुआ तांबा और रांगा समान भाग तिन
दोनोंकी बराबर नमक इनको सराइयोंमें रखके, तिनकी संधियोंमें
मट्टी लेपकर, तिसको गजपुटयंत्रविधिसे फूंकै ॥ ८ ॥ फिर
तिसकी सुंदर भस्म होजाती है, यह भस्म यथायोग्य अनुपानके
संग सेवन करनी चाहिये, यह संपूर्ण प्रमेहोंको नष्ट करती है,
और जठराग्निको बढ़ाती है, खांसी तथा श्वासको हरती है ॥ ९ ॥
वीर्यस्तंभ हो, मदोन्मत्त स्त्रियोंको सुख देनेमें समर्थ पुरुष
होवे, यह तत्व मैनें सेवा करके, किसी जटाधारी तपस्वीसे ग्रहण
किया है ॥ १० ॥

वृष्यप्रयोगः ।

शतावरीनागवलात्मगुप्तेक्षुरश्वदंष्ट्रातिलमाषचूर्णम् । पयः-

सिताढ्यंनिशितेनपेयंकांताशतंयस्यगृहेविभाति॥ ११ ॥
द्राक्षाचंदनकुष्ठकेसरतुगाक्षीरंचजातीफलंकंकोलंचपुनर्नवामुसलयाधात्र्याश्वगंधान्वितम्। एतेषांसमभागिकंसमसितंसर्पिर्युतंखादयेद्धातुक्षैण्यबलक्षयाश्मरिरुजःपित्तास्रजंभ्रामकम् ॥ १२ ॥

अर्थ–शतावरी, गंगेरन, केवांचके बीज, तालमखाना, गोखरू, तिल, उड़द इन्होंका चूर्ण बना, मिश्री सहित दूधके संग उस मनुष्यकों पीना चाहिये-कि जिसके घरमें सौ १०० स्त्री होवें ॥ ११ ॥ दाख, चंदन, कुष्ठ, नागकेशर, वंशलोचन, जायफल, कंकोल, पुनर्नवा (सांठी) मुसली, आंवला, असगंध इनको समानभाग ले, चूर्ण बनावे, इस चूर्णकी बराबर मिश्री मिलावे, पीछे घृतमें मिलाके, इस चूर्णको खावे तो धातुक्षीण, बलक्षय, पथरी, पित्तरक्त, भ्रम ये सब रोग दूर होवें ॥ १२ ॥

एलादिचूर्णम्।

एलामांसिलवंगनागरकणामुस्ताहिमंधान्यकंखर्जूरंचतमालपत्रमधुकोशीरद्वयंदाडिमम्। हिक्काकामलपांडुरोगनिचयंमूत्रेचदाहोष्मतांमेहान्विंशतिनाशयेचसततंप्रीतिमदंबृंहणम् ॥ १३ ॥

इलायची, जटामांसी, सूंठ, पीपल, नागरमोथा, चंदन, धनिया, खजूर, तमालपत्र, मुलहटी, दोप्रकारका खसखस, अनारकी छाल, इनका चूर्ण बना, विधिपूर्वक सेवन करे तो हिचकी, कामला, पीलिया, मूत्रआने समय दाह (जलन) वीसप्रकारके प्रमेह इन सर्वरोगोंको नष्ट करै, प्रीति और धातुको बढ़ावे ॥ १३ ॥

स्तंभनदीपम्।

मंदामंत्रितभास्कराहृतरवेःकार्पासवर्त्याकृतस्यैरंडोद्भवतैलदीपितरुचेर्दीपस्ययावत्स्थितिः। तावत्तेमनुजाःसुखेनसुरतंकुर्वंतुवृष्यैर्भृताःकांताभिर्मदमत्तदंतिगतिभिःकामादिकर्मादिभिः ॥ १४ ॥

अर्थ—शनिवारके दिन आकको निमंत्रण (नवत) आवे फिर रविवारके दिन उसके फलोंकी रुई निकालके बत्ती बना, तिसको अरंडीके तेलमें जलावे, जबतक उस बत्तीकी चांदनी रहे तबतक वे पुष्ट दवाई खानेंवाले मनुष्य मदोन्मत्त हस्तीसरीखे गमन करनेंवाली कामातुर स्त्रियोंके संग भोग कर सकते हैं ॥ १४ ॥

द्रावणप्रयोगः ।

रसेनसम्यक्मरहट्टिकायाघृष्टेनसूतेनसमाक्षिकेण । विलिप्तलिंगोरमतेययासामदोद्धतापिद्रवतामुपैति ॥ १५ ॥

अर्थ—मरहटीबूटीके रसमें पाराको खरलकर, तिसमें शहद मिला, लिंगमें लेप करके, जिस स्त्रीके संग रमण करै. वह मदोन्मत्त होवे तोभी द्रव होती है ॥ १५ ॥

मेदोरोगप्रतीकारः ।

व्योषाग्निमंथत्रिफलाविडंगैःसमंपुरंयोभजतेमनुष्यः । मेदोमरुत्श्लेष्मजघोररोगास्तस्याशुसर्वेविलयंप्रयांति ॥१६ ॥

अर्थ—सूंठ, मिर्च, पीपल अरणी (नरवेल) चीत, त्रिफला (आंवला, हरड़, बेहड़ा) बायबिड़ंग इन सबोंके बराबर शुद्ध गूगल फिर इस औषधको (दोतीनमासे अनुमान) हमेशह खावे तो मेदवृद्धि, वात, कफ इनसे उत्पन्नहुए घोर रोग शीघ्रही नष्ट होवें॥१६॥

उदररोगप्रतीकारः ।

चूर्णसखेलवणरामठयोःसमानंगोमूत्रमिश्रितमिदंपिबतांनराणाम् । नानाविधानिजठराणिलयंप्रयांतिगंगोदकंप्रपिबतामिवपातकानि ॥ १७ ॥

अर्थ—हेसखे ! लवण, (नमक) हींग इनको समान भाग ले, चूर्ण बना, हमेंशाह गोमूत्रके संग पीनेवाले मनुष्योंके अनेक प्रकारके उदररोग ऐसे नष्ट होजाते हैं कि-जैसे गंगाजलको पीते हुए मनुष्योंके पाप नष्ट हो जाते हैं ॥ १७ ॥

शोफोदरप्रतीकारः।

पुनर्नवादारुमहौषधांबुगोमूत्रसिद्धश्वयथुंनिहंति। तथाक-
णाशुंठिगुडोत्थचूर्णशोफामशूलघ्नमजीर्णहारि ॥ १८ ॥
गवांक्षीरंवरामिश्रंशोफोदरविनाशनम्।गोमूत्रेणसमायुक्तं-
महिषीणांपयोथवा ॥ १९ ॥

अर्थ–पुनर्नवा (सांठी,) देवदार, सूंठ इन्होंका काथ (कढ़ा) बना गोमूत्रमें पकावे, इसके पीनेसे सूझन दूर होवे. अथवा पीपली, सूंठ इनके चूर्णको गुड़में मिलाके, भक्षण करे. खावे तो आमशूल, ये सब दूर होवें ॥ १८ ॥ गौके दूधके साथ त्रिफला यानी आंव-ला, हरड़, बेहेरके चूर्णको पीवे तो शोफोदर (उदरका सूझन दूर हो) अथवा गोमूत्रमें मिलाके, भैसका दूध पीवे ॥ १९ ॥

अंडवृद्धिप्रतीकारः।

हरतिरबुकतैलंदुग्धयुक्तंनिपीतंवृपणजनितपीडांनात्रशंका-
विधेया। यवतिलऋतुजन्मैरंडबीजैःसुखोष्णैर्हरतिकृतवि-
लेपःकांजिकेनप्रपिष्टैः ॥ २० ॥

अर्थ–अरंडीके तेलको दूधमें मिलाके, पीवेतो अंडवृद्धि रोगकी पीड़ा दूर हो. इसमें कुछ शंका नहीं करनी. अथवा जव तिल, पुनर्नवा (सांठी) अरंडीके बीज इनको कांजीके जलमें पीस, कुछ गर्म करके, लेप करेतो अंडवृद्धि दूर होवे ॥ २० ॥

गंडमालाप्रतीकारः।

सविश्वचूर्णस्यतुकांचनारत्वचःकषायस्यनिषेवणेन। प-
लायतेसाकिलगंडमालायथामृगीव्याधविलोकनेन ॥ २१ ॥

अर्थ–कचनारकी छालका काढ़ा बना, तिसमें सूंठका चूर्ण मिला-के, पीवे तो गंडमाला रोग दूर हो. जैसे व्याधके देखनेसे हिरनी भाग जाती है तैसे ॥ २१ ॥

गंडमालारिलेपः ।

मूलंसितायागिरिकर्णिकायामूलंविशालाभवमुग्रगंधा। गो-
मूत्रपिष्टंत्रितयस्यलेपात्सोपद्रवागच्छतिगंडमाला ॥ २२ ॥

अर्थ–सफेद गिरिकर्णी (विष्णुकान्ता की जड़) गडूंभाकी जड़, वच इनतीनोंको गोमूत्रमें पीस, लेपकरनेंसे उपद्रवसहित गंडमाला दूर होती है ॥ २२ ॥

श्लीपदप्रतीकारः ।

गोमूत्रेणनिशाचूर्णसगुडंयःपिबेत्सखे ।
वर्षोत्थंश्लीपदंतस्यदद्रुकुष्ठंचनश्यति ॥ २३ ॥

अर्थ–हे सखे! हलदीका चूर्ण और गुड़ मिलाके, गोमूत्रको पीवे तो वर्ष दिनसे उत्पन्न हुआ श्लीपद रोग और कुष्ठ दूर होता है ॥ २३ ॥

विद्रधिप्रतीकारः ।

विद्रधौरुधिरमोक्षणंहितंपंचवल्कलघृतैश्चलेपनम् ।
शिग्रुमूलजरजोंतरुत्थितेविद्रधौमधुयुतंप्रशस्यते ॥ २४ ॥

अर्थ–विद्रधि रोगमें (बड़, गूलर, पीपल, पिलखन, बेतस) इनकी बक्कलोंमें सिद्ध किये हुये घृतका लेप करना हित है. और सहेंजनकी जड़के चूर्णमें शहत मिलाके, खावे तो अंतर्विद्रधि दूर हो जो शरीरमें, नाभिमें, कोखमें, गुदामें, जांघोंकी संधिमें गोलाकार सूझन, पक जावे. और फूटके भीतरको रांधजावे. उसे अंतर्विद्र धि कहते हैं ॥ २४ ॥

---

१ गलेमें अथवा कांखमें अथवा कंधेंमें, जांघोंकी संधियोंमें बेरसमान आंवलेके फलसमान बहुत गांठियां पड़ जावें. उसे वैद्य गंडमाला कहते हैं. २ जांघोंकी संधि पिंडलीमें सूझन हो, बहुत पीडाहो फिर वह सूझन क्रमसे बढ़के पैरतक आजावे हस्तीके पैर सरीखा होजावे वह श्लीपद कहते हैं.

व्रणभग्नयोःप्रतीकारः ।

पुरप्रयुक्तस्त्रिफलाकषायोहितोनराणांव्रणपीडितानाम् ।
आभावचाव्योषसमःपुरस्तुभग्नस्यसंधानकरःप्रदिष्टः॥ २५॥

अर्थ–व्रण (घाव) से पीड़ित हुए जनोंको गूगल करके युक्त कियाहुआ त्रिफला (आंवला, हरड़, बहेरा) का काढ़ा पिलाना हित है. और कुरंड, बच, व्योष (सूंठ, मिर्च, पीपल) इन सबोंके समान गूगलको ग्रहणकर, गोली बना, विधिपूर्वक खावे तो भग्न अर्थात् टूटी हुई हड्डी जुड़ जावे ॥ २५ ॥

नाडीव्रणभगंदरयोःप्रतीकारः ।

फलत्रिकव्योपसमःपुरस्तुघृतेननाडीव्रणरोगहारी ।
भगंदरेप्राक्रुधिरस्यमोक्षस्ततोव्रणोक्तोविधिरेषयुक्तः॥२६॥

त्रिफला (आंवला, हरड़, बहेरा) व्योष (सूंठ, मिर्च, पीपल) इन्होंके समान गूगलको ग्रहणकर, घृतमें मिलाके, खावे तो नाड़ी व्रण (नाड़ीका घाव) अच्छा होवे, [१]भगंदर रोगमें पहले रुधिर निकलावे. पीछे व्रणमें कही हुई विधि करनी ॥ २६ ॥

उपदंशशूलदोषयोःप्रतीकारः ।

मोचारसंपूगविभूतिकांचलोलत्वचंनिर्मलशंखजीरम् ।
पिष्ट्वोपदंशेखलुनिक्षिपेतत्र्यहेणरोगंसकलंनिहंति ॥२७॥

अर्थ–मोचरस, सुपारीकी राख, बेरीकी छाल, सफेद शंखजीरा इनको बारीख पीस, लिंगके ऊपर लगावे तो तीनही दिनमें उपदंश (गरमी) रोग दूर हो ॥ २७ ॥

---

१ गुदाके आसपास चारों-ओर दो दो अंगुलमें फुनसी हों और फूटैं तब पीड़ा हो. उस जगंह फुनसी बहा करैं. उसको भगंदर कहते हैं. यह रोग भग, गुदा और बस्तिके बीचमें भगके अकार होता है इस लिये भगंदर कहाता है.

उपदंशारिधूम्रपानम् ।

आदित्यमूलदरदाल्लकधूमदानात्स्थातुंबिभेतिसकला-
प्युपदंशपीडा । श्वश्रूजनैर्बहुतरंपरिबोधितापिलघ्वीयथा-
प्रियतमारमणेनरंतुम् ॥२८॥ हयमारजटालेपादुपदंशो-
विनश्यति । शूकदोषेष्वसृङ्मोक्षोजलौकोभिःप्रशस्यते॥२९

अर्थ—आककी जड़, हिंगूल, अकरकरा इनका धूमपान करनेंसे संपूर्ण उपदंशकी पीड़ा नहीं ठहर सकती. जैसे सासुआदिकोंकर के बहुत समझाई हुईभी छोटी स्त्री अपनें भर्त्ताके संग रमण करती हुई डरै तैसे ॥ २८ ॥ कनेरकी जड़का लेप करनेंसे उपदंश रोग दूर होता है. और सुजाख रोगमें जोंकोको लगवाके, रुधिर निकलाना ठीक है ॥ २९ ॥

कुष्ठप्रतीकारः ।

पीत्वासदुग्धंशुचिगंधचूर्णंकुष्ठावलीचंचलतांबिभर्ति । च-
कोरनेत्राकुचपद्मकोशंदृष्ट्वानराणामिवचित्तवृत्तिः ॥३०॥
गंधंसूतंशिलालौमरिचमपिनिशायुग्मसिंदूरतुत्थादद्रुघ्नो-
बाकुचीतज्जरणयुगमिदंनिंबुतोयाज्ययुक्तम् । लौहेलौहे-
नमर्धंप्रहरमितमथोहंतिमाहेश्वराख्यंदद्रुंकंडुंचपामांहरइव-
पटलींसंस्मृतःपातकानाम् ॥३१॥ मूलंसितायागिरिकर्णि-
कायाजलेनपिष्ट्वाकुरुतेप्रलेपम् । सुश्वेतकुष्ठंकिलतस्यगंतुं-
मासात्प्रयत्नंकुरुतेनितांतम् ॥ ३२ ॥

अर्थ—शुद्धकिये हुये गंधकके चूर्णको दूधके संग पीवे तो सब प्रकारके कुष्ठ दूर होते हैं. जैसे चकोरसमान नेत्रवाली सुंदर स्त्रीके कुचकमलको देखनेंसे कामी पुरुषोंका चित्त चलायमान होजाता है तैसे ॥ ३० ॥ रस, गंधक, पारा, मनशिल, हरताल, मिर्च, हलदी, दारुहलदी, सिंदूर, नीला थोथा, पुवाड़के बीज, बावची, दोनों प्रकारके जीरे इन सबोंको समान भाग ले, निंबूके रसमें खरल करके, घृत मिलावे. यह माहेश्वर नामक रस लोहाके खरलमें

लोहाके दंडसे एक प्रहरतक खरल करना चाहिये. इस औषधको शरीरमें लेप करे तो दाद, खाज, पामा इन रोगोंको ऐसे हरलेवे जैसे महादेवजीके स्मरणसे पापसमूह नष्ट होजावें ॥ ३१ ॥ सफेद गिरि-कर्णी (विष्णुक्रान्ता) की जड़को पानीमें पीस, लेप करे तो श्वेत-कुष्ठ शीघ्रही नष्ट होजावे ॥ ३२ ॥

उदर्दकोठयोःप्रतीकारः ।

गुडेनदीप्यंभजतेनरोयःपथ्येनयुक्तःकिलसप्तरात्रम्।उद-र्दकोठोविलयंप्रयातिनरस्यतस्यापिनकापिशंका ॥ ३३ ॥

अर्थ—जो मनुष्य सात रात्रितक गुड़में मिलाके, अजमानको खावे. और पथ्यमें रहै उसके उदर्द और कोठ रोग दूर होवे इसमें कुछ शंका नहीं करनी ॥ ३३ ॥

अम्लपित्तप्रतीकारः ।

भूनिंबनिंबत्रिफलापटोलवासामृतापर्पटमार्कवाणाम् ।
कषायकोमाक्षिकसंप्रयुक्तोनिहंतिसोपद्रवमम्लपित्तम् ॥३४॥

अर्थ—चिरायता, नींबकी छाल, त्रिफला (आंवला, हरड़, बहेरा) परवल, बांसा, गिलोय, पित्तपापड़ा, मार्कव (भृंगराज) इन्होंका क्वाथ (काढ़ा) बना, शहत मिलाके, पीवे तो अम्लपित्तरोग दूर हो, खट्टा वमन करै, शरीरमें खाज होय, चकत्ते पड़ जांय, डकार बहुत आवें, कंठमें दाह हो, हाथ पैरोंमें दाह ये अम्लपित्तके लक्षण हैं ॥ ३४ ॥

विसर्पप्रतीकारः ।

पिचुमंदपटोलतोयदानांकथितंसप्तदिनंसखेपिबत्वम् ।
अलसंकुरुमात्रमंदबुद्धेयदितेसर्वविसर्पनाशनेच्छा ॥ ३५ ॥

---

१ वायु पित्त कफको प्राप्त होयके, रुधिर, मांस-आदि सातों धातु-ओंको बिगाड़के, शरीरमें छोटी बड़ी फुनसियोंके मंडल फैल जावें सो विसर्प कहलाता है.

निशाद्वयंव्याघ्रिशिरीषमांसीयष्टीनतैलाजलचंदनाद्यैः ।
दशांगलेपोज्वरशोफकुष्ठविसर्पशुष्केंधनजातवेदाः ॥ ३६ ॥

अर्थ—हे सखे ! तुम नींबकी छाल, परवल, नागरमोथा इनका काढ़ा बनाके, सात दिनतक पीवे तो विसर्परोग दूर हो. हेमंदबुद्धे! जो इसरोगको दूर किया चाहते होवो तो आलस्य मत करो॥३५॥हलदी, दारुहलदी, कटेहली, शिरसाकी छाल, जटामांसी, मुलहटी, तगर, इलायची, नेत्रवाला, चंदन, इन दश वस्तुओंको पीस, (घृतमिला) लेप करेतो ज्वर, सूझनसहित विसर्प कुष्ठ दूर हो. जैसे शूखे इंधनको अग्नि जलादेती है तैसे ॥ ३६ ॥

विस्फोटकप्रतीकारः ।

कीर्तनंशीतलादेवीस्तोत्रमंत्रस्ययत्कृतम् ।
इदमेवौषधंमुख्यंविस्फोटकविनाशनम् ॥ ३७ ॥

अर्थ—विस्फोटकमें शीतला देवीका स्तोत्र-मंत्र-आदिसे पूजन करना यही औषध मुख्य है. विस्फोटकरोग दूर होता है. (इसे माता निकली कहते हैं) ॥ ३७ ॥

मसूरिकाप्रतीकारः ।

पटोलतिक्तावृषनिंबमुस्ताछिन्नारजोयासकिरातकानाम् ।
आमांमसूरींशमयेच्चपक्कांविशोधयेत्सत्यमयंकषायः ॥३८॥

अर्थ—परवल, कुटकी, वंस, नींब, नागरमोथा, गिलोय, पित्तपापड़ा, धमासा, चिरायता इन्होंका काढ़ा बनाके, पिलावे तो कच्ची मसूरिका पकजावें और पकी हुई मसूरिकाका विशोधन हो जावे(मसूरकी दालसमान फुनसियां होती हैं विस्फोटक यानी शीतलाका भेद है सो मसूरिका कहाती हैं ॥ ३८ ॥

क्षुद्ररोगप्रतीकारः ।

क्षुद्ररोगेषुसर्वेषुक्षुद्ररोगंचिकित्सकम्। चिकित्सकाः
प्रकुर्वंतुसुगमत्वादुपेक्षितम् ॥ ३९ ॥

अर्थ—अन्य संपूर्ण क्षुद्ररोगोंमें वैद्यजन अपनी बुद्धिके अनुसार चिकित्सा करैं. सुगम होनेंसे यहां इस ग्रंथमें नहीं लिखे हैं॥ ३९ ॥

मुखपाकप्रतीकारः ।

द्राक्षादार्वीयासपथ्याऽक्षधात्रीछिन्नाजातीपल्लवानांकपायः । क्षाद्रोद्रिक्तोहंतिगंडूषयुत्त्यापाकंवक्रांभोजसंस्थं महांतम् ॥ ४० ॥

अर्थ—दाख, दारुहलदी, धमासा, हरड़ै, बहेड़ा, आंवला, गिलोय, जूईके पत्ते इन्होका काढ़ा बना, तिसमें शहत मिला, कुरले करे तो अत्यंत मुखपाक दूर होवे ॥ ४० ॥

गलरोगप्रतीकारः ।

पाठाविषादारुकलिंगमुस्तातिक्ताकपायंमधुसंप्रयुक्तम् । गोमूत्रसिद्धंमनुजाःपिबंतुगलोद्भवव्याधिषुसर्वजेषु ॥ ४१ ॥

अर्थ—पाठा, अतीश, दारुहलदी, इंद्रजव, नागरमोथा, कुटकी इन्होका काढ़ा गोमूत्रमें बनावे. तिसमें शहत मिलाके, पीवे तो गलके संपूर्ण रोग दूर हों ॥ ४१ ॥

दंतरोगप्रतीकारः ।

आढक्यादलमध्यगान्सुमतिमान्भल्लातकान्मृन्मये । पात्रेस्थाप्यविधायपावकमधःप्रज्वालयेद्युक्तितः ॥ तद्भूत्याखिलदंतघर्षणमिदंकुर्वंतुलोकाःसदा। योगोऽयंकिलदंतरोगमदभृन्मत्तेभकंठीरवः ॥ ४२ ॥

अर्थ—पंडितजन माटीके पात्रमें अरहड़की दाल डाल, तिसके बीचमें भिलावोंको धरके, तिसके नीचे अग्नि जलावै. फिर उसकी राख करलेवै. तिस भिलावोंकी राखको दांतोंमें मसलै. यह योग दंतरोगरूपी मदोन्मत्त हस्तीके नाश करनेंमें सिंहरूप है ॥ ४२ ॥

कर्णरोगप्रतीकारः ।

पक्वोयस्मिन्वृश्चिकःप्राणहीनःकर्णेतैलंतत्सखेपूरयत्वम् ।

एतत्तैलस्पर्शमात्रेणसत्यंसद्योनाशंकर्णरोगाःप्रयांति ॥ ४३॥

अर्थ—बीछूको तेलमें पकावे. तिस तेलको कानमें डाले तो इस तेलके स्पर्शमात्रसे संपूर्ण कानके रोग दूर होते हैं. इसमें संदेह नहीं ॥ ४३ ॥

नासारोगप्रतीकारः ।

विडंगयष्टीसुरदारुसिंधुकटुत्रिकैःसाधितमाशुतैलम् ॥
नासामयघ्नंकथितंमुनींद्रैःसखेत्वमेतत्कुरुशीघ्रमेव ॥ ४४ ॥
दाडिमीकुसुमतोयनावनमित्यादि ॥ ४५ ॥

अर्थ—वायबिड़ंग, मुलहटी, देवदार, सेंधौनमक, त्रिकटु (सूंठ, मिरच, पीपल) इन्होंमें तेलको पकावे. इस तेलकी नस्य देवे तो संपूर्ण नासिकाके रोग दूर होवें. ऐसे मुनिजनोंने कहा है ॥ ४४ ॥ अनारके फूलोंके रसकी नस्य देनेंसे नाशारोग दूर होंय इत्यादिक इलाज जानना ॥ ४५ ॥

नेत्ररोगप्रतीकारः ।

शिग्रुपल्लवरसःसमाक्षिकोहंतिसर्वनयनामयांस्तथा ।
द्वारिकांजनहरीतकीपटुदार्विकाभवविलेपनंबहिः ॥ ४६ ॥

अर्थ—सहेंजनके पत्तोंके रसमें शहत मिलाके, नेत्रोंमें डाले तो संपूर्ण नेत्ररोग दूर हों और गेरू, सुरमा, हरड़ै, सेंधोनमक, दारुहल्दी इन्होंको जलमें पीस, नेत्रोंके बाहिर लेप करै ॥ ४६ ॥

त्रिफलांजनम् ।

पथ्याबिभीतधात्रीणांबीजैस्त्रिद्व्येकभागिकैः। वर्तिर्नेत्रांजिताहंतिप्रकोपंदारुणंदृशोः ॥ ४७ ॥

अर्थ—हरड़, बहेड़ा, २ आवला १ ये तीन ३ दो २ एक १ भागके क्रमसे ग्रहण करनें. फिर गोली बना, जलमें पीसके, नेत्रोंमें आंजे तो दारुण नेत्रदर्द जावे ॥ ४७ ॥

रसकेश्वरवटी ।

रसकंसैंधवंतुल्यंटंकणंकटुकत्रयम् । मर्दयेन्निंबुनीरेणवटी-

छायावशोषिता ॥ ४८ ॥ अंजितामधुनानेत्रेनेत्ररोग-
विनाशिनी । रूक्षत्वमर्बुदंपुष्पंदुर्मांसंतिमिरार्जुने॥ ४९ ॥
पटलंनेत्रवातंचकाचबिंदूदकानिच । अन्यानपिमहारो-
गान्नाशयेद्रसकेश्वरः ॥ ५० ॥

अर्थ–खापरा, सेंधोनमक, नीलाथोथा, सुहागा, सूंठ, मिर्च, पीपल, इनको निंबूके रसमें खरल कर, छायामें सुखाके, गोली बांध लेवे ॥ ४८ ॥ फिर शहतमें घिसके, नेत्रोंमें आंजे तो सब प्रकारके नेत्ररोग दूर हों. रूखापन, अर्बुद, फूल, दुर्मांस, तिमिर, अर्जुन, (फूलादरड़ा) पटलरोग, नेत्रवात, मोतियाबिंद इत्यादिक नेत्र-रोग और अन्य महान् नेत्ररोगोंको यह रसकेश्वर औषध दूर करती है ॥ ५० ॥

शिरोरोगप्रतीकारः।

छिन्नाकिरातत्रिफलात्रियामातिक्ताकषायोगुडसंप्रयुक्तः ।
शिरःशिरोर्द्धश्रवणाक्षिदंतभ्रूशंखशूलानिनिहंतिसद्यः॥५१॥
सूर्याधिवर्तद्विजपातशुक्रनक्तांध्यचक्षुःपटलानिचैव । न-
स्यंतुगुंजाभवमूलकस्यशिरोर्द्धशूलेकिलरामबाणः ॥५२॥
एरंडमूलौषधशिग्रुमूलपटोलपाठामयदद्रुनिघ्नैः । धान्या-
म्लपिष्टैर्विहितःप्रलेपःसंपूर्णमूर्द्धामयकालरात्रिः ॥ ५३ ॥
इतिश्रीअर्हमद०तृतीयालंकारः ॥ ३ ॥ ॥ ॥

अर्थ–गिलोय, चिरायता, त्रिफला, (आंवला, हरड़, बहेरा.) हलदी, कुटकी इनका काढ़ा बना, तिसमें गुड़ मिलाके, पीवे तो मस्तकशूल, अर्धशिरा, कान, आंख, दांत, भौंह, कनपटी इन्होंकी शूलको शीघ्रही नष्ट करता है ॥ ५१ ॥ और सूर्यावर्त्त, दांत-गिरना, फूला, रातौंधी, नेत्रपटल इन रोगोंकोभी दूर करता है. और गुंजा (चिरमठी) की जड़को पानीमें पीस, नस्य देवे. (नांकमें सुंघावे) आधासीसी (अर्द्धशिरा) शिरदर्दमें यह दवा रामबाण

(बहुत उत्तम) है ॥ १२ ॥ अरंडकी जड़, सूंठ, सहेंजनकी जड़, परवल, पाठा, कुष्ठ, पुवाड़की जड़ इनको कांजीमें पीस, लेप करै. यह दवा संपूर्ण मस्तकरोगदर्दको नष्ट करनेमें कालरात्रि है. अर्थात् सबको नष्ट करता है । इति श्रीवेरीपुरनिवासि० वसंतिरामविर० वैद्यामृतभाषाटीकायां तृतीयोलंकारः ।

स्त्रीरोगप्रतीकारः ।

वृषदारुनिशाकिरातभल्लीरसजांभोधरबिल्वजःकषायः ।
मधुनामधुरीकृतोनिहंतिविविधानिप्रदराणिकामिनीना-
म् ॥ १ ॥

अर्थ—अरूसाके पत्ते, दारुहलदी, चिरायता, भिलावां, रसौत, नागरमोथा, बेलगिरी, इन्होंका काढ़ा बना, शहत मिलाके, पिलावे तो स्त्रियोंका प्रदर रोग (पैरा चलना) बंदहो ॥ १ ॥

प्रदरारियोगः ।

दुग्धप्रयुक्ताखुपुरीषपानादसृग्दरंतिष्ठतिनैवसत्यम् ।
कंदर्परूपेपिनितांतपंढेकांतेयथामानसमंगनानाम् ॥ २ ॥

अर्थ—मूसाकी लेंड़ीको दूधमें मिलाके, पीवे तो स्त्रियोंका प्रदर (पैरा) कभी न ठहर सके जैसे कामदेवके समान सुंदररूपवाले नपुंसकपतिविषे स्त्रियोंका मन नहीं रहता है तैसे ॥ २ ॥

शूलयुक्तप्रदरोपायः ।

त्रिपुषाघृतसंयुतामृगाक्षीप्रदरंशूलयुतंनिराकरोति । प्रथमे-
सुरतेयथानवोढाप्रियहस्तंवतनीत्रिपुप्रयुक्तम् ॥ ३ ॥

अर्थ—कचरीके पत्ते अथवा चौलाईकी जड़को घृतमें मिलाके, खावे तो शूलयुक्त प्रदर (पैरा) बंद होवे. जैसे प्रथमसंगमें नवीन स्त्री नाड़ा खोलते हुए पतिके हाथको बंद करती है, तैसे यह दवा प्रदर रोगको बंद करै ॥ ३ ॥

गर्भाधानप्रयोगः।

वंध्याःप्रियानैवसुखाययस्माद्ददामितासांकमपिप्रयोगम्।
पलाशबीजस्यमषीजलेनपीत्वासगर्भाललनाभवंति ॥ ४ ॥

अर्थ—वंध्या स्त्री प्रिय नहीं रहती हैं इसलिये उनके वास्ते कुछ प्रयोग कहते हैं. ढाकके बीजकी राख कर, तिसको जलमें घोलके, पीवे तो स्त्री गर्भवती हो ॥ ४ ॥

गर्भस्थिरीकरणम्।

पीत्वातंदुलतोयेनतंदुलीयजटांकृतौ । पतद्गर्भाचयाना-
रीस्थिरगर्भाप्रजायते ॥ ५ ॥

अर्थ—चावलोंके धोनेके जलमें चौलाईकी जड़को घोटके, पीवे तो जिस स्त्रीका गर्भ गिरता हो वह स्थिरगर्भवाली हो ॥ ५ ॥

स्त्रीरक्तस्तम्भप्रयोगः।

मनोरमायाःकिलगर्भवत्यारक्तंस्रवेच्चेद्बहुलंतुयस्याः।
पारावतीयंसहसापुरीषंतांपाययेत्तंदुलतोयमिश्रम् ॥ ६ ॥

अर्थ—जिस गर्भवती स्त्रीके बहुतसा रुधिर झिरता हो उसको शीघ्रही चावलोंके धोनेके पानीके साथ कबूतरकी बीटको पिलावै॥६॥

गर्भपातनप्रतीकारः।

शर्करायवतिलैःसमांशकैर्माक्षिकेणसहभाक्षितंस्त्रियः। ना-
स्तिगर्भपतनोद्भवंभयंपापभीतिरिवतीर्थसेवनैः ॥ ७ ॥
प्राचीनमिदंपद्यम् ॥

अर्थ—खांड़, तिल, यव, इनको समान भाग ले, चूर्ण बना, शहतके संग खावे तो गर्भगिरनेंका भय नहीं रहै. जैसे तीर्थसेवन-करनेंसे पापोंका भय नहीं रहता है तैसे॥७॥यह पुराना श्लोक है।

सुखप्रसूतिप्रयोगः।

वृषस्यमूलंयदिनाभियोनौप्रलेपितंस्त्रीझटितिप्रसूते।

तथाकटिस्थःकदलीसुकंदोवेगात्प्रसूतिंकुरुतेंगनानाम् ॥ ८ ॥

अर्थ–अरूसाकी जड़को पीसके, नाभिमें और भगमें लेप करे देवे तो स्त्री शीघ्रही सुखसे संतान जनै. अथवा कटिपर केलाकी जड़ बांध देवे तो स्त्रियोंके सुखसे बालक उत्पन्न हो ॥ ८ ॥

योनिशूलारिकल्कम् ।

विडोपकुंचीवृपकोपकुल्यावचोपणग्रंथिकनागराणाम् ।
कल्कःसुखोष्णेनजलेनपीतःशूलानियोनिप्रभवान्निहंति
॥ ९ ॥ प्राचीनमिदंपद्यम् ॥

अर्थ–विड़नोंन, बावची, वांसा, पीपली, बच, मिर्च पीपलामूल, सूंठ इन्होंका कल्क बना, कछुक गरम जलके साथ पीवे तो योनिशूल दूर हो ॥ ९ ॥ यह पुरातन श्लोक है ।

स्त्रीरोगयोनिशूलारिस्तथासंकोचनप्रकारः ।

शुंठीरुवुकमूलाभ्यांप्रलेपोभगशूलनुत् । तथासंको-
चनंचूर्णमृत्स्नामायफलोद्भवम् ॥ १० ॥

अर्थ–सूंठ, अरंडकी जड़, इनका लेप करनेंसे योनिशूल दूर होवे. और मुलतानी माटी (अथवा भूनी हुई फटकड़ी) माजूफल, इनके चूर्णको भगमें धरे तो योनिसंकोच होवे ॥ १० ॥

अगर्भदपोटलिका ।

मृतप्रियाप्रोपितभर्तृकावासुखेनसर्वैःसुरतंकरोतु ।
पश्चाद्भगेसैंधवदीप्यतैलैरगर्भदांपोटलिकांदधातु ॥ ११ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीका पति मरगया हो ऐसी जार स्त्री सुखपूर्वक सब जनोंके संग रमण करै. पीछे भगमें सेंधौनमक, अजमान, तेल, इन्होंकी पोटली रखलेवे तो उसके गर्भ नहीं ठहरेगा ॥ ११ ॥

गर्भपातप्रयोगः ।

जातासगर्भैवयदातदासागर्भस्यपातंसहसाकरोतु ।
सदुग्धहिंगुंसुपलाशबीजमर्षींप्रपीत्वाननुगोप्यमेतत् ॥१२॥

अर्थ–जो यदि वह जार स्त्री गर्भवती हो जावे तो हींग, ढाकके बीजकी राख, इनको दूधके संग पीके, गर्भपात कर देवै. यह औषध गुप्त रखनी ॥ १२ ॥

स्तनरोगप्रतीकारः।

इंद्रवारुणिकामूललेपाद्यातिकुचव्यथा ।
तथाकुमारिकाकंदहरिद्रालेपनादपि ॥ १३ ॥

अर्थ–गडूंभाकी जड़का लेप करनेंसे अथवा कुमारीकंद (कोरफली कंद) का लेप करनेंसे वा हलदीके लेपकरनेंसे स्तनोंकी पीड़ा दूर हो ॥ १३ ॥

स्तनदुग्धसमुद्रम् ।

विदारिकाकंदरसःसदुग्धःशतावरीवाकुरुतेंगनानाम्। सदुग्धभक्ताशनतत्पराणांपयोधरौप्राज्यपयःसमुद्रौ ॥ १४ ॥

अर्थ–विदारीकंद, (भूईकोहला) के रसको वा चूर्णको अथवा शतावरीके चूर्णको दूधमें मिलाके, पीवे. और दूध भातका भोजन करे तो स्त्रियोंके स्तनोंमें समुद्रसमान अत्यंत दूध होवे ॥ १४ ॥

बालरोगप्रतीकारः ।

बालकंधातकीलोध्रंविल्वंचगजपिप्पली । मधुमिस्रौकाधलेहौवालातीसारनाशनौ ॥ १५ ॥

अर्थ–नेत्रवाला, धायके फूल, लोध, बेलकी गूदी, गजपीपली इन्होंका काढ़ा अथवा चूर्ण बना, शहद मिलाके, खिलावे तो बालकके दस्त बंद हों ॥ १५ ॥

पिपल्यादिचूर्णम् ।

कृष्णारुणाशृंगिपयोधराणांसचूर्णितंमाक्षिकसंप्रयुक्तम् ।

शिशोर्ज्वरच्छर्द्यतिसारकासश्वासघ्नमेतत्समुदाहरंति ॥ १६ ॥

अर्थ–पीपली, मंजीठ, काकड़ासींगी, नागरमोथा इनका चूर्ण बना, तिसमें शहत मिलाके, खिलावे तो बालकोंका ज्वर, वमन, अतिसार, खांसी, श्वास ये सब दूर होवें ॥ १६ ॥

विषप्रतीकारः ।

तुत्थगंधरसरात्रिटंकणैर्वेणितोयपरिमर्दयेद्दृढे । हंत्ययंविषहरोनरांबुनास्थावरंतदनुजंगमंविषम् ॥ १७ ॥

अर्थ–नीलाथोथा, गंधक, पारा, हल्दी, इनको बारीख खरलकर, कडुवी तुंबीके रसकी भावना दे, छोटी २ गोली बांध लेवे. फिर मनुष्यके मूत्रके साथ इस गोलीको लेवे तो स्थावर जंगम (शंखिया, सर्प आदिक) सब विषोंकी पीड़ा नहीं हो ॥ १७ ॥

विरेचनम् ।

हिंगूलटंकणवरात्रिकटूग्रगंधावाल्कीकदीप्ययुगसैंधववेल्लदंत्याः । सर्वैःसमोनिगदितोजयपालभागःसर्वंतुनिंबुसलिलेनविमर्द्यमेतत् ॥ १८ ॥ गुंजाप्रमाणवटिकोष्णजलेनगुल्मपांडुक्षयश्वसनकासबलासमेहान् । आध्मानशूलगुदजोदरवन्हिमांद्यविष्टंभकुष्ठक्रिमिरुक्प्रभृतीन्निहंति ॥ १९ ॥

अर्थ–हिंगलू, सुहागा, त्रिफला, (आंवला, हरड़, बेहरा) त्रिकटु (सूंठ, मिर्च, पीपल) वच, हींग, अजमान, अजमोद, सैंधौनमक, बायविड़ंग, जमालगोटाकी जड़ इन सबोंको समान भाग ले, सबके बराबर जयपाल (जमालगोटा) फिर इन सबोंको निंबूके रसमें खरल करै ॥ १८ ॥ एकरत्तीप्रमाणकी गोलियां बांधै. एक गोलीको कुछ गरम जलके संग लेवे तो जुलाब लगे और गुल्म (बादीका गोला) पीलिया, क्षयीरोग, श्वास, खांसी कफ, प्रमेह अफारा, शूल, बवासीर, उदररोग, मंदाग्नि, मलावरोध, कुष्ठ, कृमिरोग-आदि सब रोग दूर हों ॥ १९ ॥

ग्रंथर्तुःप्रार्थनाशिक्षाच ।

मोरेश्वरेणभिषजानगरस्थितेनवैद्यामृतंकृतमिदंबहुधाविचार्य ।। वैद्यास्तएवकृपयापरिपालयंतुसम्यक्सनातनविचारविशारदाये ।। २० ।। अनुभवात्कतिचित्कतिचिद्गुरोःकतिचशास्त्रभवान्नवमर्जिताः। इहमयाभिषजांहितमिच्छतानिगदिताःशुचियोगगणाइमे ।। २१ ।। भ्रमादशुद्धंगदितंयदिस्याद्दोषोनकश्चिन्ममभावनीयः । भूलोकजन्माखिललोकधर्मभ्रांतेःपरंदूषणमेतदस्तु ।। २२ ।। भोभोवैद्यसुताःशृणुध्वमधुनासौभाग्यदंकीर्तिदंपापक्षालनमंत्रतंत्रविहितंमान्यंमदीयंवचः । यूयंसन्मनसाचिकित्सितविधौहित्वादुराशांपरांशंभोविश्वपतेत्वदर्पणमिदंभूयादितिध्यायत ।। २३ ।। हुताशनाकाशरसेंदुयुक्तेसंवत्सरेदुर्मतिनामभाजि ।। वैद्यामृतंनामदधानएषग्रंथः स्मरारेःकृपयासमाप ।। २४ ।। ।। इतिश्रीमदहंमदनगरस्थितमाणिकभट्टात्मजमोरेश्वरविरचितेवैद्यामृतेचतुर्थोलंकारःसमाप्तिमगमत् ।। ।। समाप्तोऽयंग्रंथः ।। ।।

अर्थ–नगरमें स्थित हुए मोरेश्वर नामक वैद्यनें बहुत प्रकार विचार करके, यह वैद्यामृत नामक ग्रंथ बनाया है. जो सम्यक् सनातनधर्मके विचार करनेंमें निपुण हैं. वे उत्तम वैद्य कृपाकरके, इस मेरे ग्रंथकी पालना (रक्षा) करें ।। २० ।। वैद्योंके हितकी इच्छा करते हुए मैनें इस ग्रंथमें कितने एक इलाज नुकसे तो अपनें अनुभवसे (अपनें बोधसे अजमानेंसे) कितेक गुरुसे सीखके, कितेक, अन्यशास्त्रोंमेसे इस ग्रंथमें संचय किये हैं. ऐसे ये सब पवित्रयोगगण कहे हैं ।। २१ ।। जो यदि भ्रमसे कोई अशुद्ध कह दिया हो तो मेरा कुछ दोष नहीं मानना क्योंकि-पृथ्वीलोकमें जन्मनेंवाले सब मनुष्योंका स्वभाविक धर्महीं भ्रांतिवाला है. सभीमें यह दूषण रहता है ।। २२ ।। हे वैद्यजनों ! पापको दूर करनेंवाला

मंत्रतंत्रसे युक्त, मान्य, सौभाग्यदायी ऐसे मेरे वचनको अब सुनो, तुम सब श्रेष्ठ मनसे चिकित्साविधिमें परमदुराशा (कमहिम्मत) को त्यागके, ऐसा ध्यान करो कि-हे शंभो ! हे विश्वपते ! यह सब तुम्हारे अर्पण है. ऐसे शिवजीकी प्रार्थना करो ॥ २३ ॥ हुताशन ३ आकाश० रस ६ इंदु १ अर्थात् १६०३ दुर्मति नामवाले संवत्में यह वैद्यामृत ग्रंथ श्रीसदाशिवजीकी कृपासे समाप्त होता भया ॥ २४ ॥इति श्रीमाणिकाभट्टात्मजमोरेश्वरभट्टविरचितवैद्यामृते बेरीपुरनिवासिगौड़वंशोद्भवद्विजशालग्रामात्मजपंडितवसतिरामशास्त्रिविराचित-भाषाटीका समाप्ता ॥

श्लो०—इंद्रप्रस्थपुरप्रान्तबदरीपुरवासिना ।
बुधेनखेषुनन्दाब्जवत्सरेरचितात्वियम् ॥ १ ॥

सं. १९५० द्वीतीया आषाढ़शुद्धा ४ सोमवासरे पूर्णतामगात् ।
वैद्यामृतस्य नृगिरातिलकान्वितस्य मोरेश्वरेण रचितस्य च रामभद्रः ।
व्योमेषुगोविधुशरद्धिषणेऽसितेहमूर्जेकृतान्ततिथौविचकारशोधनम् ॥ १

प्रेमसागर.

श्रीयुत पंडित लल्लूलालजीकृत जिस्में भक्त-हितकारी मुरारी कंसारी पूतनाप्राणहारी द्विभुज-मुरलीधारी श्री बांकेविहारीकी रहस्य रासलीला आदि अनेक लीलायें सुन्दर ललित मनोहर चमत्कारिक सरल हिन्दीके शब्दोंमें वर्णन हैं परंतु यह पुस्तक आजतक बहुत ठिकानोंपर छपी लेकिन इसकी सुधारणा अच्छी प्रकार नहीं भइथी इसलिये हमनें बड़े परिश्रमसे जहां २ श्रीमद्भागवतसें विरुद्ध था वहां २ सप्रमाण टिप्पण करायके शुद्ध करवाय परमोत्तमरीतिसे अच्छे कागजपै सुवाच्य टाइपके अक्षरोंमें मुद्रित कराया है इसकी उत्तमता कहांलौ वर्णन करैं ऐसा पुस्तक तो आजतक कहींभी छपा नहीं परंतु प्रसंशा तो तभी मालूम होगी जब सुजन जन मंगाके बांचेंगे और आगेकी प्रतियोसें मिलावेंगे. रफ कागद की. रु. १। और ग्लेज अच्छा कागद. की. १॥ टपाल. ख. ६ आ०

हरिप्रसाद भगीरथजी,

कालिकादेवी रोड़—रामवाड़ी—मुंबई.